दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

सितंबर – अक्टूबर, 2018

सीआईआरबी –
डेरी किसानों की सेवा में

आर्गेनिक दूध
की संभावनाएं

ऊंट का दूध
प्रकृति का उपहार

www.indairyasso.org

गौवंश से प्यार-सुखी संसार

रोहिणी संतुलित पशु आहार

पैलेट्स एवं मैश (चूरा)

चिलेटेड मिनरल मिश्रण

रोहिणी के उत्पाद

बायपास प्रोटीन

बिनौला खल

मधु अमृत (शीरा, जड़ी-बूटी व मिनरल्स युक्त)

रोहिणी पशुआहार की विशेषताऐं

- उच्च प्रोटीन, बायपास प्रोटीन व जड़ी-बूटी युक्त
- सभी उत्पादों में एफ्लाटॉक्सिन की मात्रा पर कडा नियंत्रण
- चिलेटेड मिनरल्स एवं विटामिन युक्त
- पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ायें
- पशुओं हेत पूर्ण पोषित एवं संतुलित आहार
- दूध व फैट में वृद्धि में सहायक
- पशुओं की पाचन क्षमता को बढ़ायें
- रोहिणी पशुआहार पूर्ण रुप से शाकाहारी है।

पशु आहार उत्पादन के उत्पाद (Raw Material) उपलब्ध

डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - +91 9314 303 689, 98282 50413

उपलब्धियां एवं पुरस्कार

यूनिक ऑर्गेनिक्स लिमिटेड

ई- 521 सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर 302022 (राज.)

Helpline No. - 0141-2770315, 93143 03689 | E-mail - rohini@uniqueorganics.com

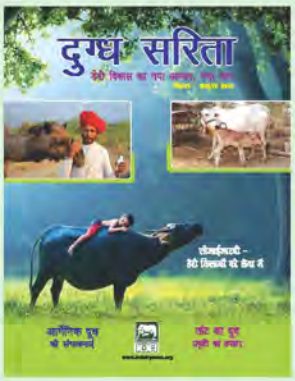

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 2 अंक : 5 सितंबर–अक्टूबर 2018

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. जी.एस. राजौरिया
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. ओमवीर सिंह
प्रबंध निदेशक
एनडीडीबी डेरी सर्विसेस, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना

श्री किरीट मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. बी.एस. बैनिवाल
प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, एचएयू कैम्पस, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड, गाजियाबाद

प्रकाशक
श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क
इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 4

प्रसार

डेरी किसानों की सेवा में केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान 8
हेमा त्रिपाठी, वी.बी. दीक्षित, सज्जन सिंह, एवं इन्द्रजीत सिंह,

कविता

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती....! 13
सोहन लाल द्विवेदी

समाचार 14
संपादकीय डेक्स

उपयोगिता

ऊंट का दूध–प्रकृति का उपहार 16
तन्मय हाजरा, सुभाष प्रसाद, रोहित सिंधव, सी एच वी सुधींद्र

कहानी

दो बैलों की कथा 24
प्रेमचंद

सफलता गाथा

नयी राह पर चलीं बनीं कामयाब डेरी उद्यमी 30
जगदीप सक्सेना

आई टी

डेरी व्यवसाय में सहायक आई.वी.आर.आई-डेयरी मैनेजर ऐप 33
रूपसी तिवारी, प्रज्ञा जोशी, अमनदीप सिंह तथा त्रिवेणी दत्त

गुणों से भरपूर, गाय का दूध 36
संपादकीय डेक्स

परिचय

हमारी अपनी साहीवाल गाय 38
डा. जीत सिंह यादव, सुशील कुमार, डा. के. पी. सिंह, डा. पुष्पेन्द्र कुमार

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुन: प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. जी.एस. राजौरिया

उपाध्यक्षः डॉ. सतीश कुलकर्णी और श्री ए.के.खोसला

सदस्य

चयनितः श्री आर.एस. सोढ़ी, डॉ. जी.आर.पाटिल, डॉ. राजा रत्तिनम, डॉ. के.एस. रामचन्द्र, डॉ. जे.वी. पारिख, डॉ. एस.के. कनौजिया, श्री सुधीर कुमार सिंह, श्री किरीट के. मेहता, श्री राजेश सुब्रमनियन, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचन्द्र चौधरी और श्री टी.के. मुखोपाध्याय **नामित सदस्यः** श्री अरूण नरके, श्री एस.एस.मान, डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, श्री सी.पी. चार्ल्स, श्री अरूण पाटिल, श्री मिहिर कुमार सिंह, डॉ. आर.आर.बी. सिंह और श्री संग्राम आर. चौधरी

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, फैक्स – 91–11–26174719, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय शाखाएं एवं चैप्टर्स

दक्षिणी क्षेत्रः श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** श्री अरूण पाटिल, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः arunpatilida@gmail.com **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, अध्यक्ष, द्वारा एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, के सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** डॉ. के. रत्तिनम, अध्यक्ष; द्वारा एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणद कृषि विश्वविद्यालय, आणद– 388110, गुजरात, ई–मेलः guptahk@rediffmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, द्वारा प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवासु डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री ललित कुमार कौशिक, अध्यक्ष, द्वारा जयपुर डेयरी, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर– 302015, टेलीफोन नं. 9549653400, फैक्स 0141–2711075, ई–मेलः idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** श्री इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष; द्वारा निदेशक, डेरी विकास विभाग, पंजब लाइवस्टॉक कॉम्पलैक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर–68, मोहाली, फोन : 0172–5027285, ई–मेलः director_dairy@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री एस.के. सिंह, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, पटना डेयरी कार्यक्रम, वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, फीडर बैलेन्सिंग डेयरी कॉम्प्लेक्स, फुलवारीशरीफ, पटना–01505. ई–मेलः sudhirpdp@yahoo.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** करनाल, (हरियाणा) **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** डॉ. सी. नरेश कुमार, अध्यक्ष, द्वारा प्रोफेसर एवं प्रमुख (सेवानिवृत्त), डेयरी विज्ञान विभाग, मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज, चेन्नई–600 007. **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** श्री के. भास्कर रेड्डी, अध्यक्ष; प्रबंध निदेशक, क्रीमलाइन डेयरी प्रॉडक्ट्स लिमिटेड, 6–3–1238/बी/21, आसिफ एवेन्यू, राज भवन रोड, सोमाजीगुड़ा, हैदराबाद–500 082. फोनः 040–23412323, फैक्सः 040–23323353. **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष, प्रोफेसर, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005, फोनः 0542–6701774/2368583, फैक्सः 0542–2368009, ई–मेलः dcrai.bhu@gmail.com

DeLaval

ड लवाल सीएमटी किट के साथ आपनी गायों में मस्टायटिस कि करीए जाँच

मैस्टायटिस (थनैला) कैसे होता है :

- दूध-दोहन के पश्चात भी गाय का थन 30 मिनट तक खुला रहता है।
- जिससे मैस्टायटिस फैलाने वाले जीवाणूओं का प्रवेश होता है।
- यह जीवाणू मैस्टायटिस का कारण बनते है।
- सफेद रक्तकोशिका थन में पहुंचकर इन जीवाणूओं का नाश करती है।
- सफेद रक्तकोशिकाओं की संख्या मतलब अधिक संक्रमण स्तर और दूध की हानी।
- मैस्टायटिस से संक्रमीत दूध की सिएमटी किट की मद्द से गौशालामें जांच करनेसे मैस्टायटिस स्तर का कम समय मे पता चलता है।

ड लवाल सीएमटी किट

सब-किलनिकल मस्टायटिस के निदान के लिए

सीएमटी के लाभ :

- बहुत किफायती और इस्तेमाल के लिए आसान
- दूध उत्पादकसे अपने गौशाला में अपने जानवरों का परीक्षण संभव
- १० से १५ सेकंड में परिणाम
- मस्टायटिस के कारण होने वाली हानियों की चेतावनी

सीएमटी परीक्षण प्रक्रिया :

दूध दोहनेसे पहले गाय के प्रत्येक थन से २ मिली. दूध सिएमटी पॅडल के हर एक विभाग में डाले
इस हर एक विभागके दूध में ३ मिली. सिएमटी रिएजंट डालकर पॅडल को ठीक तरहसे हिलाए
मस्टायटिसे संक्रमित सैम्पल में गाढ़ापन आसानी से दिखाई देगा
संक्रमित गायों का रिकॉर्ड तैयार किजीए

We live milk

Maharashtra (H.O.) :
DeLaval Private Limited A-3, Abhimanshree Society, Pashan Road, Pune - 411008, India.
Tel. +91-20-6721 8200, Fax +91-20-6721 8222 **Product Information :** marketing.india@delaval.com
Website : www.india-delaval.in www.facebook.com/DeLavalIndia

100+ Years of Milking Excellence Since 1917

Celebrating journey of 25 years in India

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

आर्गेनिक दूध
नये अवसर, नयी चुनौतियां

प्रिय पाठकों,

रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों, एंटीबायोटिक्स आदि के प्रचुर उपयोग से कृषि उत्पादों के संदूषण की समस्या ने हाल में आर्गेनिक (जैविक) खेती को बढ़ावा दिया है, क्योंकि लोगों में इस संदूषण से उत्पन्न होने वाली संभावित स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है। इससे आर्गेनिक रूप से उत्पादित दूध और दूध उत्पादों की मांग भी अचानक बढ़ी है, जिससे किसानों, उत्पादकों, दूध का प्रसंस्करण करने वाले उद्यमियों, व्यापारियों और एग्री–बिजनेस संचालकों के लिए नये अवसर बने हैं। भारत की विविध कृषि जलवायु प्रकार और अद्भुत कृषि जैवविविधता आर्गेनिक फार्मिंग के लिए उपयुक्त और अनुकूल वातावरण प्रदान करती हैं। भारत सरकार के वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय ने 'फॉरेन ट्रेड एंड डेवलपमेंट एक्ट' के अंतर्गत आर्गेनिक खाद्य उत्पादन पर एक व्यापक राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया है। इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण दस्तावेज प्रकाशित किया गया है, जिसमें आर्गेनिक उत्पादों के मानकों, विभिन्न उत्पादन प्रणालियों के मानदंडों, मान्यता प्राप्त करने की प्रक्रियाओं, प्रमाणीकरण संस्थाओं का ब्यौरा और राष्ट्रीय चिन्ह तथा इसके उपयोग से संबंधित निर्देशों का विवरण दिया गया है।

उपभोक्ताओं की सुरक्षा और आर्गेनिक व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए जैविक रूप से उत्पादित खाद्य पदार्थों हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिशा–निर्देश तैयार किये गये हैं। एफएओ और डब्लूएचओ के संयुक्त खाद्य मानक कार्यक्रम के अंतर्गत आर्गेनिक खाद्य उत्पादन के लिए व्यापार संबंधी दिशा–निर्देश विकसित किये गये हैं, जिसमें विभिन्न देशों में प्रचलित नियमों–विनियमों को भी ध्यान में रखा गया है। ताकि आर्गेनिक खाद्य उत्पादन की आवश्यकताओं के साथ उत्पाद की गुणवत्ता, लेबलिंग और दावों के संबंध में कोई धोखाधड़ी या अनुचित व्यवहार ना किया जा सके।

खेतों में आर्गेनिक उत्पादन प्रणालियां वहां की सामाजिक, पारिस्थितिक और आर्थिक रूप से सतत् कृषि–पारिस्थितिक प्रणालियों का उपयोग करते हुए उत्पादन के विशिष्ट और सटीक मानकों पर आधारित होती हैं। आर्गेनिक डेरी का मुख्य लक्ष्य मिट्टी, वनस्पतियों, डेरी पशुओं और स्थानीय निवासियों के स्वास्थ्य तथा उत्पादकता को इष्टतम बनाना है। आर्गेनिक उत्पादन चक्र में तैयारी, भंडारण, परिवहन, लेबलिंग और मार्केटिंग जैसे सभी संबंधित पहलुओं को शामिल किया जाता है और भूमि की उर्वरता, चारा फसलों में रोग व कीट नियंत्रण तथा सुरक्षित प्रसंस्करण विधियों के लिए स्वीकार्य सीमाएं भी तय की गयीं हैं। इसमें खाद्य योजक के उपयोग के दिशा–निर्देश भी शामिल हैं।

'आर्गेनिक' लेबल या दावे का अर्थ है कि आर्गेनिक उत्पाद और इसके उत्पादन के लिए उपयोग में लाये गये पदार्थों को आर्गेनिक उत्पादन के मानकों के अनुसार तैयार किया गया है और मान्यताप्राप्त प्रमाणीकरण संस्था या निरीक्षण प्रणाली द्वारा प्रमाणित किया गया है। यहां ध्यान देने वाली बात यह भी है कि आर्गेनिक उत्पादन विधियां विभिन्न हानिकारक अवशेषों और संदूषकों से पूरी तरह से मुक्त होने का दावा नहीं कर सकतीं, क्योंकि ऐसे अनेक अवांछित कारणों से पर्यावरण में प्रदूषण मौजूद होता है, जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं है। लेकिन हां, आर्गेनिक दूध के उत्पादन को विभिन्न एंटीबायोटिक्स जैसे बीटा लैक्टेम, पेनिसिलिन, एक्पीसिलिन, एमॉक्सीसिलिन, क्लोक्सेसिलिन, सीफापिरिन और सेफ्टियोफर से मुक्त रखा जाता है। प्रत्येक वर्ष यूएसएफडीए द्वारा एक रिपोर्ट

प्रकाशित की जाती है, जिसमें दूध और दूध उत्पादों में पाये गये दवा अवशेषों की जानकारी दी जाती है। यदि गाय का एंटीबायोटिक्स, कॉक्सीडियोस्टेटिक्स और अन्य दवाओं से उपचार किया जाता है या शरीर वृद्धि को बढ़ावा देने वाले हार्मोन दिये जाते हैं, तो उसके दूध पर आर्गेनिक का लेबल नहीं लगाया जा सकता। जबकि सामान्य दूध में एंटीबायोटिक्स का अवशेष पाया जा सकता है, लेकिन हां, यह हो सकता है कि इसकी मात्रा स्वीकार्य सीमा के भीतर हो।

कई बार गायों में भार वृद्धि को बढ़ावा देने वाले हार्मोन्स यानी 'ग्रोथ हार्मोन्स' का इंजेक्शन लगाया जाता है ताकि उनकी बढ़वार तेज हो और वे ज्यादा दूध दें। इस्ट्रोजीनिक ग्रोथ हार्मोन्स में दूध उत्पादन को 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ाने की क्षमता होती है। पास्चुरीकरण की प्रक्रिया के दौरान रिकम्बाइंड बोवाइन ग्रोथ हार्मोन नष्ट हो जाता है। इसके बावजूद आर्गेनिक दूध उत्पादन में ग्रोथ हार्मोन्स के उपयोग पर प्रतिबंध है। दूध में मौजूद बीएसटी हमारी पाचन प्रक्रिया के दौरान नष्ट हो जाता है या ऐसे हानिकारक पेस्टीसाइड के अंश नहीं बना पाता, जिनका हमारे शरीर पर कोई जैविक प्रभाव हो।

सामान्य रूप से मानव पोषण में दूध को खनिजों का मुख्य स्रोत माना जाता है। साधारण दूध में ये खनिज पदार्थ रातबों से आते हैं, जबकि आर्गेनिक दूध मे इनका मुख्य स्रोत मिट्टी या विभिन्न चारागाहों में आर्गेनिक रूप से उगाया जाने वाला हरा चारा है। आर्गेनिक डेरी के लिए आवश्यक है कि दुधारू पशुओं का रख–रखाव, पोषण और उपचार आदि मान्य आर्गेनिक विधियों से किया जाए और इसका प्रमाणीकरण भी लिया जाए। इसलिए आर्गेनिक दूध का उत्पादन अपेक्षाकृत महंगा होता है। वर्ष 2016 में भारत में आर्गेनिक दूध की बिक्री मात्र एक प्रतिशत थी, जबकि अमेरिका में 18 प्रतिशत थी ।

दूध का आर्गेनिक प्रमाणीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसमें प्रमाणीकरण संस्था द्वारा दूध का उत्पादन, प्रसंस्करण, परिरक्षण और मार्केटिंग आदि प्रक्रियाएं पहले से निश्चित दिशा–निर्देश के अनुसार करनी आवश्यक होती हैं। निरीक्षण की प्रक्रिया में प्राधिकृत अधिकारी द्वारा सभी संबंधित प्रक्रियाओं को डेरी में देखा–परखा जाता है और रिकॉर्ड की जांच भी होती है। दूध पर आर्गेनिक का लेबल कड़ी जांच प्रक्रिया के बाद ही दिया जाता है। जांच के दौरान दुधारू पशुओं को दिये जाने वाले आहार, फीड्स, चारा आदि का भी निरीक्षण किया जाता है और कई बार नमूने भी लिये जाते हैं, ताकि उनके आर्गेनिक होने का साक्ष्य प्रमाणित किया जा सके। इसके साथ ही आर्गेनिक प्रक्रिया में गायों को खुले में चरने के लिए छोड़ना भी आवश्यक होता है, क्योंकि आर्गेनिक के नाम पर गायों के आराम और कल्याण के साथ समझौता नहीं किया जा सकता।

दूध पर आर्गेनिक लेबल लगते ही इसकी कीमत बढ़ जाती है, जिससे उपभोक्ता को अधिक और कभी–कभी दुगुनी कीमत तक चुकानी पड़ती है। ग्राहकों को यह विश्वास दिलाना होगा कि यह दूध आर्गेनिक है। यह एक नितांत विश्वास आधारित प्रक्रिया है, क्योंकि सभी संबंधित दी गयी सूचनाओं के आधार पर कार्यवाही कर रहे हैं। इसलिए कई बार उपभोक्ता इसको लेकर संदेह भी प्रकट करते हैं। यदि साधारण दूध की बिक्री की बात करें तो दुधारू पशुओं के आहार की बाजार कीमत बढ़ती जा रही है, जबकि दूध की कीमतें गिर रहीं हैं। इसलिए दूध उत्पादकों को अनेक आर्थिक समझौते करने पड़ते हैं। आर्गेनिक दूध उत्पादन की कीमत इससे भी अधिक होती है। हमारे देश में पशुओं को चराई के लिए छोड़ने से भी दूध की कीमत बढ़ती है, क्योंकि इसके लिए चारागाहों के बड़े क्षेत्र की आवश्यकता होती है, जिनकी उपलब्धता लगातार कम होती जा रही है। एक विशेष बात यह भी है कि चारागाहों पर गुजर–बसर करने वाली गायों की तुलना में दाने वाले आहार पर जीवन–यापन करने वाली गायें अधिक दूध देती हैं, क्योंकि इस आहार को अधिक दूध उत्पादन के अनुकूल बनाकर परोसा जाता है। परंतु चारागाहों पर आधारित गायों के दूध की पौषणिक गुणवत्ता कुछ मायनों में बेहतर होती है ।

भारत में आर्गेनिक दूध उत्पादन का व्यवसाय तेजी से वृद्धि की ओर अग्रसर है, क्योंकि अनेक संचार–प्रचार माध्यमों ने दूध में मिलावट के मुद्दे को बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत किया है। साथ ही दूध और दूध उत्पादों में हानिकारक कीटनाशकों, हार्मोन्स, एंटीबायोटिक्स आदि के अवशेषों की उपस्थिति की समस्या को भी आवश्यकता से अधिक तूल दिया गया है। इन सब तथ्यों के बावजूद यदि देश में दूध उत्पादकों और प्रसंस्करणकर्ताओं को आर्गेनिक दूध उत्पादन की लहर का लाभ उठाना है तो आर्गेनिक दूध उत्पादन के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिशा–निर्देशों तथा मानकों का पालन करना आवश्यक है।

घनश्यामसिंह राजौरिया

(घनश्याम सिंह राजौरिया)

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अहमदाबाद जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)

अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)

आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)

आरोहण डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, तंजावुर (तमिलनाडु)

बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)

बनासकांठा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)

बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)

बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)

बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

सीपी दुग्ध और खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)

डेयरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

डेनफोस इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)

देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद डीयूएसएस लिमिटेड, बेगूसराय (बिहार)

डोडला डेयरी लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

द्वारका मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लिमिटेड, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

इली लिली एशिया इंक, बेंगलुरु (कर्नाटक)

एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

फार्मगेट एग्रो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)

खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)

फॉंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

गरिमा मिल्क एंड फूड्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड (दिल्ली)

गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)

गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आंणद (गुजरात)

जीआरबी डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)

हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)

हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)

आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू, (कर्नाटक)

इंडियन इम्यूनोलौजिकल्स लिमिटेड, (आंध्र प्रदेश)

भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)

जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कौस्तुभ जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

करनाल दुग्ध उत्पाद लिमिटेड (दिल्ली)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

ख़ैबर एग्रो फार्म्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)

खम्बेत कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

क्वालिटी डेयरी इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली (दिल्ली)

कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

लार्सन एंड टूब्रो इन्फोटेक लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मध्य प्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, भोपाल (मध्य प्रदेश)

मालाबार क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोझीकोड (केरल)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

एनसीडीएफआई, आंणद (गुजरात)

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद (गुजरात)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)

नोवोजाइम्स दक्षिण एशिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

संस्थागत सदस्य

नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)

पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)

पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)

परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)

पब्लिक प्रोक्योरमेंट ग्रुप (दिल्ली)

प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)

आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

एसआर थोराट दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

सील्ड एयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

श्राइबर डायनामिक्स डेयरीज लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

सीरैप इंड्रस्टीज़, नौएडा (उत्तर प्रदेश)

श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

स्टर्न इन्ग्रेडिएन्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

शिमोगा सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसाइटीज़ संघ लिमिटेड, शिमोगा (कर्नाटक)

द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)

द पटियाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पटियाला (पंजाब)

द पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, चंडीगढ़ (पंजाब)

द रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)

द रोपड़ जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)

द संगरूर जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (पंजाब)

उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)

वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

विरबैक ऐनीमल हैल्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

वार्षिक सदस्य

एबीटी उद्योग, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

एबॉट हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

बी.जी. चितले डेयरी, सांगली (महाराष्ट्र)

कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

ड्यूक थॉमसन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)

गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला

आईसीएल प्रबंधन एवं व्यापार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)

मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)

मॉडर्न डेयरीज लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)

ऑटोकम्पू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)

पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)

राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

सह्याद्रि कृषि उत्पाद और डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

शारदा डेयरी एवं खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छत्तीसगढ़)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (दिल्ली)

शेंदोंग बिहाई मशीनरी कंपनी लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)

श्रीचक्र दुग्ध उत्पाद एलएलपी (आंध्र प्रदेश)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, वाधवान (गुजरात)

तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)

विद्या डेयरी, आणंद (गुजरात)

प्रसार

डेरी किसानों की सेवा में केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान

हेमा त्रिपाठी[1], वी.बी. दीक्षित[1], सज्जन सिंह[1],
एवं इन्द्रजीत सिंह[2],
1. प्रधान वैज्ञानिक
2. निदेशक
आई.सी.ए.आर.–केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार

भैंस को देश के सबसे लोकप्रिय दुधारू पशु के रूप में प्रतिष्ठित करने में वैज्ञानिक अनुसंधान ने अहम् भूमिका निभायी है। इस संदर्भ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने हरियाणा के हिसार में केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान (सीआईआरबी) की स्थापना करके एक बड़ी पहल की। हरियाणा राज्य सरकार द्वारा पूर्व–प्रोजिनी परीक्षित सांड फार्म, हिसार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को हस्तांतरित करने के फलस्वरूप वर्ष 1985 में केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान की स्थापना हुई थी। पंजाब राज्य सरकार के नीली–रावी भैंस फार्म को इस संस्थान को हस्तांतरित किया गया, जहां इसके उपकेन्द्र को दिसम्बर, 1987 में पंजाब के पटियाला जिले के बीर दोसंझ, नाभा में स्थापित किया गया। संस्थान के मुख्य परिसर में मुर्रा नस्ल के उत्कृष्ट पशुओं वाले प्रजनन समूह को स्थापित किया गया है, जबकि इसके उपकेंद्र पर नीली–रावी भैंसों की उच्च वंशावली वाले प्रजनन समूह को स्थापित किया गया है। इस संस्थान में भैंस सुधार के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान द्वारा कार्य का संचालन किया जा रहा है, जिसमें संरक्षण, सुधार तथा जननद्रव्य का प्रवर्धन, इष्टतम आहार तथा आहार प्रणालियों का विकास, प्रजनन दक्षता में वृद्धि, दूध, मांस में वृद्धि के लिए स्वास्थ्य प्रबंधन प्रक्रियाएं तथा इस प्रजाति की भारवाही क्षमता में वृद्धि लाने जैसे विषय सम्मिलित हैं। यह संस्थान भैंस अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी सहयोगरत है। संस्थान के नेतृत्व में भैंस सुधार पर एक नेटवर्क परियोजना भी चलायी जा रही है, जिसके केंद्र पूरे देश में फैले हैं।

डेरी विकास के लिए महिलाओं को प्रशिक्षण

प्रसार योजनाओं एवं गतिविधियों द्वारा सीआईआरबी का प्रयास है कि छोटे, सीमांत कृषक, खेतिहर मजदूर, ग्रामीण महिलाएं तथा युवा पशु–पालक आधुनिकतम वैज्ञानिक जानकारी लेकर अपने ज्ञान–स्तर को बढ़ाकर एवं दक्षता हासिल करके वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित भैंस–पालन उद्यमिता अपना सकें। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं तथा राज्य सरकारों के पशु–चिकित्सकों तक भैंस प्रौद्योगिकी हस्तांतरण किया जा रहा है। संस्थान मुर्रा भैंस ब्रीडर्स एसोसिएशन की जन्म स्थली भी है, जो भैंस सम्बन्धित आवश्यकता आधारित समस्याओं को सुलझाने में सहायक है। इस संस्थान को भैंस अनुवांशिकी सुधार हेतु आईएसओ प्रमाणिकता भी प्राप्त है।

उत्कृष्ट झोटों के हिमीकृत वीर्य की उपलब्धता

भैंस की उत्कृष्ट नस्लों की बेहतर खूबियों को चयन द्वारा प्रसारित करने के लिए संतति परीक्षित हिमीकृत वीर्य उपलब्ध कराने का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है। उन्नत नस्लों के बेहतरीन सांडों से सीमेन इकट्ठा कर, उसे जांच–परख के बाद प्रशीतित तापमान में संरक्षित किया जाता है और उसकी सीमेन खुराकों के रूप में वितरण तथा बिक्री की जाती है। उत्कृष्ट सीमेन खुराकों की मांग केवल देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी है। सीमेन खुराकों की आसान उपलब्धता और बेहतर नतीजों के कारण भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान यानी एआई की तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। गांव–गांव में पशुपालक इसका इस्तेमाल कर दूध उत्पादन और अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं। इसी क्रम में उन्नत नस्लों के बेहतर खूबियों वाले कटड़े और सांड भी गांवों में उपलब्ध कराये जाते हैं। कुछ पशु पालकों द्वारा भी उत्कृष्ट सांडों की सीमेन खुराकें बेचने का काम व्यवसाय के रूप में किया जा रहा है।

बिक्री हेतु उन्नत झोटे

यह संस्थान विशेष रूप से उत्कृष्ट मुर्रा तथा नीली–रावी की उच्च वंशावली के प्रजनक सांडों की बुक वैल्यू के आधार पर प्रजनन हेतु देश की विभिन्न विकास एजेंसियों, प्रजनकों, पंचायतों तथा किसानों को बिक्री करता है ताकि वे इस नस्ल के प्रजनन क्षेत्र में प्रशीतित वीर्य

ग्रामीण युवाओं को डेरी उद्यमिता का प्रशिक्षण

उत्पादन तथा प्राकृतिक संगम के लिए इनका उपयोग कर सकें।

अंगीकृत गांवों में कृत्रिम गर्भाधान

संस्थान भैंस सुधार पर नेटवर्क परियोजना के अंतर्गत हिसार के आस–पास के 10 गांवों में प्रक्षेत्र संतति परीक्षण कार्यक्रम पर भी काम कर रहा है। प्रक्षेत्र संतति परीक्षण कार्यक्रम (एफपीटी) के तहत परीक्षण किए गए झोटों के वीर्य का उपयोग कृत्रिम गर्भाधान के लिए किया जाता है और उसके बाद गर्भाधान निदान, ब्यांत रिकॉर्डिंग, मादा संततियों पर लेबल लगाना तथा मासिक परीक्षण दिन के दौरान रिकॉर्डिंग के आधार पर दूध रिकॉर्ड के लिए उनके प्रथम दुग्धस्रवण अवधि के पूर्ण होने तक संततियों पर निगरानी रखने जैसे कार्य किए जाते हैं।

बांझपन उपचार और पशु स्वास्थ्य शिविर

केन्द्रीय भैंस अनुसन्धान संस्थान पशु पालकों, राज्य सरकार, अन्य संस्थाओं व स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ मिलकर समय–समय बांझपन उपचार और पशु स्वास्थ्य शिविर आयोजित करता है। विभिन्न पशु प्रजातियों के अनेक स्वास्थ्य संबंधी रोगों के लिए उपचार के साथ–साथ किसानों को खनिज मिश्रण और डीवार्मिंग (कृमिहरण) का मुफ्त वितरण किया जाता है। ग्रामीणों के अनुरोध पर इस संस्थान द्वारा भैंस स्वास्थ्य शिविर नियमित रुप से आयोजित किए जाते हैं। प्रजनन समस्याओं से संबंधित मामलों के इलाज के लिए भैंसों पर विशेष जोर दिया जाता है। ये भैंस शिविर किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं।

दूध रिकॉर्डिंग प्रतियोगिता

संस्थान द्वारा प्रक्षेत्र में उपलब्ध उच्च दूध उत्पादक जर्मप्लाज्म का प्रमाणन करने के लिए प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को किसानों की उच्च मात्रा में दूध देने वाली भैंसों के लिए दूध प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। उच्च दूध देने वाली भैंसों के मालिकों को सीआईआरबी के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र और स्मृतिचिन्ह प्रदान किए जाते हैं।

क्षेत्र विशेष खनिज लवण मिश्रण

हरियाणा में आहार प्रक्रियाओं पर किए गए सर्वेक्षणों से अनिवार्य खनिजों जैसे कैल्शियम, फॉस्फोरस, जिंक,

संस्थान की वेबसाइट (www.cirb.res.in) पर उपलब्ध बफेलोपीडिया

भैंस हमारा अपना पशु है और दुधारू पशुओं में इसके आर्थिक महत्त्व को देखते हुए यह अति आवश्यक है कि पशुपालकों को इसके बारे में अधिक से अधिक ज्ञान कराया जाये। इसी बात को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान ने डेरी किसानों के लिए बफेलोपीडिया की रचना की ताकि भैंस पालन से संबधित सभी पहलुओं को आम बोलचाल की सरल भाषा में प्रस्तुत किया जा सके। भैंसों से अधिक उत्पादन के लिए संतुलित एवं पौष्टिक आहार उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए भैंस पोषण एवं कमी के समय चारा प्रबन्धन तथा चारा संरक्षण विषयों के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है। भैंस पालन कैसे लाभकारी हो, उसके लिए भैंस पालक को भैंसों के प्रबन्ध व देखभाल का ज्ञान होना जरूरी है। इसलिए भैंस प्रबन्धन, जनन तथा अन्य समस्याओं और भैंसों में होने वाले विभिन्न रोगों व उनका निदान आदि का विवेचन किया गया है। यह जानकारी अंग्रेजी व हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है।

कॉपर और मैगनीज की कमी का पता चलता है। खनिज का अंतः ग्रहण बनाम जरूरत के विश्लेषण के आधार पर विशिष्ट खनिज मिश्रण को विकसित किया गया। मदहीनता वाली भैंसों के राशन में इस खनिज मिश्रण के सम्पूर्ण को देने से 70 प्रतिशत भैंसों में चार सप्ताह की अवधि में गर्भधारण पाया गया। इस खनिज मिश्रण के उपयोग से पशुओं के आहार ग्रहण करने, दूध उत्पादन तथा प्रजनन दक्षता में सुधार होता है। इस प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए संस्थान इस खनिज मिश्रण को तैयार कर किसानों को वास्तविक लागत पर बेच रहा है, ताकि उन्हें इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा प्रत्येक माह परिसर में 7–10 दिवसीय प्रशिक्षण किसानों, युवाओं और महिलाओं की आधारभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उन्नत भैंसपालन और संबंधित पहलुओं पर आयोजित किया जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम पशु पालकों के आग्रह पर गाँव में भी आयोजित किये जाते है।

ग्रामीण युवाओं को कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण

बेरोजगारी दूर करने के लिए कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोलना स्वरोजगार का अच्छा विकल्प है। उत्तम नस्ल के सांडों के अभाव में कृत्रिम गर्भाधान न केवल नस्ल सुधार में सहयोगी है, बल्कि बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार का एक मुख्य व्यवसाय हो सकता है जिससे वे देश सेवा के साथ अपनी आजीविका आसानी से कमा सकते हैं। इस उद्देश्य से संस्थान ग्रामीण युवकों को भैंस पालन और नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान का प्रशिक्षण आयोजित करता है।

भैंस मेला–प्रदर्शनी का आयोजन

संस्थान प्रत्येक वर्ष 1 फरवरी को अपने स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान के मुख्य परिसर, हिसार में वार्षिक भैंस

भैंस मेला

मेला एवं प्रदर्शनी आयोजित करता है, जिसमें हरियाणा और आस–पास के सभी राज्यों से लगभग 300 विशिष्ट पशुओं, जैसे झोटों, दुधारू भैंसों, दूध नहीं देने वाली भैंसों, कटड़ियों आदि को प्रदर्शित किया जाता है। नस्ल विशेषताओं के लिए विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत प्रतियोगिताएं आयोजित कर प्रत्येक श्रेणी में विजेता पशुओं के स्वामियों को पुरस्कार वितरित किए जाते हैं। प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए लोग अपने पशुओं को बड़ी संख्या में लाते हैं। मुर्रा नस्ल की ओर किसानों का आकर्षण इन अवसरों के दौरान भी

प्रदर्शनी में जानकारी प्राप्त करते डेरी किसान

प्रसिद्ध है। साथ ही यह संस्थान विभिन्न संगठनों द्वारा आयोजित मेलों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। इन अवसरों पर क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण, संतुलित आहार, आहार ब्लॉक, जैसी प्रौद्योगिकियां तथा भैंसों की विभिन्न नस्लों के मॉडल भी प्रदर्शित किए जाते हैं।

किसान गोष्ठियों का आयोजन

समय–समय पर केन्द्र पर एवं गांव में किसान गोष्ठियों का आयोजन कर उनकी समस्याओं का वैज्ञानिकों द्वारा निराकरण किया जाता है। किसानों को कृमिहरण कार्यक्रम, परजीवी रोगों के आर्थिक महत्व, भैंसों में बांझपन, बांझपन को रोकने में खनिजों के महत्व, आदि के बारे में जागरूक किया जाता है।

तकनीकों का प्रदर्शन

स्थानीय रूप से उपलब्ध पशु आहार संसाधनों तथा महत्वपूर्ण पोषक तत्वों के कारगर उपयोग के जरिए भैंसों के लिए आर्थिक एवं संतुलित आहार विकसित करना व चारा संरक्षण हेतु साइलेज बनाने के उद्देश्य से यह संस्थान समय–समय पर गाँवों में विभिन्न तकनीकों का प्रदर्शन आयोजित करता है, ताकि विधि को देखकर किसान अपने स्तर पर अपना सकें और इसका भरपूर लाभ ले सकें।

शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन

संस्थान अनेक अवसरों पर भैंस पालकों एवं कृषक समूहों के लिए शैक्षिणक भ्रमणों का आयोजन भी करता है, जहाँ वे भैंस पालन से संबंधित जानकारी हासिल करते हैं। इन भ्रमणों का मुख्य उद्देश्य भैंस पालकों को नवीनतम जानकारी प्रदान करना है, ताकि वे उन्नत तकनीकों को अपनाकर भैंस उत्पादन स्तर बढ़ा सकें। विस्तृत जानकारी के लिए पशुपालक आई.सी.ए.आर. – केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार 125001 पर व्यक्तिगत रूप से अथवा फोन पर (टोल फ्री 1800–180–1043) किसी भी कार्यदिवस पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रसार साहित्य का प्रकाशन

यह संस्थान भैंस पालन एवं उन्नत तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी को सरल भाषा में फोल्डर, बुलेटिन, पोस्टर एवं किताबों के रुप में प्रकाशित करता है, जो मुफ्त या बहुत ही सामान्य मूल्य पर वितरित की जाती हैं ताकि जानकारी को किसान लम्बे समय तक अपने पास रख सकें और इसका उपयोग करते रहें। ■

कविता

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती....!

– सोहन लाल द्विवेदी

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती....!

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती...!!

समाचार

राजस्थान में गौमूत्र की भारी मांग, कीमत 30 रू. प्रति लीटर

राजस्थान में डेरी किसान केवल दूध बेचकर ही मुनाफा नहीं कमा रहे, बल्कि गौमूत्र की बिक्री से भी अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। बाजार में गौमूत्र की मांग इतनी अधिक बढ़ गई है कि कई बार गौमूत्र की कीमत दूध से अधिक मिलती है। गिर और थारपरकर नस्ल की देशी गायों का मूत्र थोक बाजार में 15 रू. से 30 रू. प्रति लीटर की दर से बिक जाता है, जबकि दूध की कीमत 22 रू. से 25 रू. प्रति लीटर मिलती है।

जयपुर के कैलाश गुज्जर ने आर्गेनिक खेती करने वाले किसानों को गौमूत्र की बिक्री शुरू कर दी है, जिससे उनकी आमदनी 30 प्रतिशत तक बढ़ गई है। आर्गेनिक खेती करने वाले किसान खेतों में गौमूत्र का उपयोग हानिकारक कीटनाशकों के विकल्प के रूप में करते हैं। इसके अलावा कुछ लोग गौमूत्र का उपयोग औषधीय महत्व के लिए भी करते हैं। गुज्जर को आमदनी बढ़ाने के लिए अपनी रातों की नींद कुर्बान करनी पड़ती है, क्योंकि वह रात–रात भर जागकर गौमूत्र इकट्ठा करते हैं, इसे जमीन पर गिरने नहीं देते। इस समस्या के समाधान के लिए आईडीए ने सुझाव दिया है कि श्री गुज्जर गौमूत्र बैग का इस्तेमाल करें।

जयपुर के ही एक दूध कारोबारी ओम प्रकाश मीना बताते हैं कि वह गिर नस्ल की गायों का दूध डेरी किसानों से खरीदकर 30 रू. से 50 रू. प्रति लीटर की दर से बाजार में बेचते हैं। गौमूत्र का उपयोग अनेक धार्मिक अनुष्ठानों तथा संस्कारों में भी किया जाता है, जिस कारण जनसाधारण के बीच भी इसकी मांग है।

उदयपुर स्थित महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय अपने आर्गेनिक फार्मिंग के प्रोजेक्ट के लिए प्रत्येक माह 300 से 500 लीटर गौमूत्र का उपयोग करती है, जिस पर 15,000 रू. से 20,000 रू. खर्च होते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा गौमूत्र की खरीद सीधे डेरी किसानों से की जाती है। डेरी किसानों को इस नये अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

मेघालय के लिए विशेष मिल्क मिशन

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने हाल में मेघालय मिल्क मिशन का शुभारंभ किया। इसे राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम यानी एनसीडीसी द्वारा लागू किया जा रहा हैं। उद्देश्य यह कि डेरी को अपनाकर मेघालय के किसान सन् 2022 तक अपनी आमदनी दुगुनी कर सकें, जो भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। कुल 215 करोड़ रूपये के इस मिशन के माध्यम से डेरी किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा, एक चिलिंग सेंटर की स्थापना की जाएगी और उन्नत नस्ल की गायें खरीदकर किसानो को दी जाएंगी। मिशन की सफलता से मेघालय दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर हो सकेगा और उसे अन्य राज्यों से दूध नहीं मंगाना पड़ेगा।

अजमेर डेरी द्वारा उपभोक्ताओं को कम कीमत पर घी

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र चौधरी ने संवाददाता सम्मेलन में बताया कि संघ द्वारा रक्षा बंधन, गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, गोगा नवमी, देवनारायण सप्तमी, तेजा दसमी, जल झुलनी ग्यारस आदि त्यौहारों के उपलक्ष्य पर उपभोक्ताओं को रियायती दरों पर घी उपलब्ध करवाये जाने का निर्णय लिया गया है। गत वर्ष एक टीन (15 किलो) 7300 रू. में मिल रहा था। वह अब इस वर्ष 5000 रू. प्रति टीन की दर पर उपलब्ध कराया जा रहा है। इस प्रकार लगभग 1 किलो घी 158 रू. की दर से सस्ता उपलब्ध करवा रहे हैं। सरस मावे की दर 240 रू. प्रति किलो ग्राम से घटाकर 225 रू. प्रति किलो ग्राम कर दी गई है एवं 50 किलो एक मुश्त लेने पर 203 रू. प्रति किलो की दर से मिलेगा। आशा है कि उपभोक्ता इसका भरपूर लाभ उठायेंगे।

दूध उत्पादन में वृद्धि

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा राज ने लोकसभा को एक लिखित उत्तर में बताया कि देश में दूध का उत्पादन वर्ष 2016–17 में 165.4 मिलियन

टन था, जो वर्ष 2017–18 में बढ़कर 176.35 मिलियन (अनुमानित) हो गया। इस तरह मात्र एक वर्ष में दूध उत्पादन में 6.6 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। उन्होंने यह भी बताया कि सन् 2022 के दृष्टिपत्र के अनुसार सन् 2021–22 में दूध उत्पादन बढ़कर 254.5 मिलियन टन तक पहुंचने की संभावना है। पिछले अनेक वर्षों की तरह भारत विश्व में दूध उत्पादन में शीर्ष पर अपनी जगह बनाये हुए है।

मक्खन-मूर्ति श्री कृष्णा

भारत में कीर्तिमान

इस जन्माष्टमी मुंबई में मक्खन कला का एक अद्भुत नमूना दिखाई दिया। यहां के अंधेरी स्थित इनफिनिटी मॉल में शुद्ध सफेद मक्खन से बनी श्री कृष्ण की मूर्ति लगायी गयी, जो इस कला में भारत की सबसे उंची मूर्ति है। इसे बनाने में लगभग 470 किलो ग्राम सफेद मक्खन लगा और कलाकारों ने लगातार 70 घंटे तक काम करके इस सुंदर मूर्ति की रचना की। मूर्ति के चैम्बर का तापमान नौ डिग्री सेल्सियस रखा गया, ताकि यह पिघल ना जाए। मॉल में इस मक्खन मूर्ति को देखने के लिए लगातार भीड़ बनी रही। ■

उपयोगिता

ऊंट का दूध प्रकृति का उपहार

तन्मय हाजरा, सुभाष प्रसाद, रोहित सिंधव, सी एच वी सुधींद्र
डेयरी विज्ञान कॉलेज, कामधेनु विश्वविद्यालय, अमरेली, गुजरात

प्राचीन काल से दूध मानव आहार का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। दूध में प्रोटीन, सूक्ष्म पोषक तत्व और विटामिन बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं, जो भूख और कुपोषण को कम करने के लिए आवश्यक हैं। दुनिया के कुल दूध उत्पादन में गाय के दूध का योगदान लगभग 82.7% है, इसके बाद भैंस, बकरी, भेड़ और ऊंट के दूध का स्थान आता है। हालिया वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि गाय के दूध और इसके उत्पादों के उपयोग के कारण दूध से उत्पन्न होने वाली एलर्जी संबंधी लक्षणों से आबादी का बड़ा हिस्सा प्रभावित होता है। इसलिए शोधकर्ता गाय के दूध से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए गैर- गोजातीय पशुओ (ऊंट, बकरी और भेड़) के दूध पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। वैज्ञानिक खोजो से यह भी संकेत मिलता है कि क्षेत्र विशिष्ट जानवर से प्राप्त दूध का उपयोग बेहतर होता है, जैसे रेगिस्तानी इलाके में ऊंट के दूध के उपयोग से गोजातीय पशुओं के दूध की तुलना में अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद मिलती है।

ऊंट रेगिस्तानी क्षेत्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण पशु है। खाद्य और कृषि संगठन के मुताबिक दुनिया में ऊंट की कुल आबादी 27 मिलियन है, जिनमें से 89% अफ्रीका के एक–कूबड़ वाले ध्रुवीय ऊंट (कैमलस डॉमोडेयर्स) और शेष 11% दो कूबड़ वाले ऊंट (कैमलस बैक्ट्रियंस) हैं, जो कि एशिया के ठंडे रेगिस्तान में पाए जाते हैं।

ऊंट के दूध की रासायनिक संरचना

दूध के मुख्य घटक पानी, वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज–लवण और विटामिन होते हैं, जो विभिन्न प्रजातियों के बीच मात्रात्मक और गुणात्मक रूप से काफी भिन्न होते हैं। ऊंट का दूध, जिसे रेगिस्तान का सफेद सोना

भी कहा जाता है, अन्य पशुओं के दूध की तुलना में मानव दूध से ज्यादा मेल खाता है। ऊंट के दूध में कोलेस्ट्रॉल तथा शर्करा की मात्रा कम तथा खनिज–लवण (कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम, लोहा, ताँबा, जस्ता और मैग्नीशियम), विटामिन–सी, लैक्टोफेरिन, लेक्टोपरॉक्सीडेस, इम्युनोग्लोबुलिन, जैसे सुरक्षात्मक प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है।

सारणी-1 : विभिन्न प्रजातियों के दूध की संरचना

प्रजातियां	जल%	प्रोटीन%	वसा%	एश%	लैक्टोज%
मानव	88–89	1.1–1.3	3.3–4.7	0.2–0.3	6.8–7.0
ऊंट	86–88	3.0–3.9	2.9–5.4	0.6–0.9	4.6– 4.9
गाय	85–87	3.2–3.8	3.7–4.4	0.7–0.8	4.8–4.9
भैंस	82–84	3.3–3.6	7.0–11.5	0.8–0.9	4.5–5.0
स्रोत– कुला जे (2016)					

प्रोटीन

दूध में मौजूद यौगिकों में प्रोटीन, सबसे विविध और अद्वितीय समूह में से एक है। ऊंट के दूध में 3 से 3.90 प्रतिशत प्रोटीन होती है। केसीन और मट्ठा प्रोटीन, दूध प्रोटीन के दो मुख्य भाग हैं। केसीन और मट्ठा प्रोटीन का अनुपात विभिन्न प्रजातियों पर निर्भर करता है। केसीन ऊंट के दूध में मौजूद प्रमुख प्रोटीन है जो कुल दूध प्रोटीन का लगभग 52 से 87 प्रतिशत है। यह बताया गया है कि गोजातीय दूध के केसीन के चार प्रकार के हैं, अल्फा एस–1, अल्फा एस –2,बीटा और केप्पा–केसीन, जिसमें अल्फा एस–1 केसीन प्रमुख है और अल्फा एस–1 केसीन को दूध प्रोटीन एलर्जी के मुख्य कारणों में से एक के रूप में भी पहचाना गया है। हालांकि, इसी प्रकार मानव दूध तथा ऊंट के दूध में पहचाना जाने वाला मुख्य केसीन बीटा केसीन है, जो पूरे केसीन का लगभग 65 प्रतिशत है, जबकि अल्फा एस–1 केसीन केवल 21 प्रतिशत है। वैज्ञानिक रूप से यह साबित हुआ है कि कम अल्फा एस–1 केसीन जो पाचन के दौरान धीरे–धीरे हाइड्रोलाइज्ड होता है, की उपस्थिति के कारण ऊंट के दूध को गाय दूध के विकल्प के रूप में उपयोग किया जा सकता है, जिन लोगों को गाय दूध के प्रोटीन से एलर्जी है।

ऊंट के दूध में मट्ठा प्रोटीन कुल दूध प्रोटीन के लगभग 20 से 25 प्रतिशत होता है। ऊंट के दूध में बीटा –लैक्टोग्लोबुलिन बहुत कम मात्रा में पाया जाता है, जबकि अल्फा–लैक्टालुमिन ऊंट के दूध का प्रमुख मट्ठा–प्रोटीन होता है। ऊंट के दूध की मट्ठा प्रोटीन प्रोफाइल (कम बीटा –लैक्टोग्लोबुलिन और उच्च अल्फा–लैक्टालुमिन) मानव दूध के समान होता है।

वसा

ऊंट दूध में केवल 2% वसा पायी जाती है, जो मुख्य रूप से पॉलीअनसैचुरेटेड फैटी एसिड से बना है।

कार्बोहाइड्रेट

लैक्टोज दूध में मौजूद प्रमुख कार्बोहाइड्रेट है। अन्य प्रजातियां के दूध के तरह ऊंट के दूध का प्रमुख कार्बोहाइड्रेट लैक्टोज होता है और ऊंट के दूध में लैक्टोज की औसत सांद्रता 4.6–4.9 प्रतिशत है जो गोजातीय दूध से कम है।

खनिज लवण

ऊंट के दूध में खनिज की मात्रा 0.60 से 0.90 प्रतिशत के बीच है। ऊंट का दूध सोडियम, पोटैसियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम का समृद्ध स्रोत है।

ऊंट का बहुगुणी दूध

विटामिन

ऊंट के दूध में विभिन्न विटामिन जैसे ए, बी (कॉम्प्लेक्स), डी, ई और सी प्रमुख हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों में यह साबित हुआ है कि ऊंट का दूध विटामिन–सी (34.16 मिलीग्राम प्रति लीटर) का एक समृद्ध स्रोत है और यह गोजातीय दूध की तुलना में लगभग तीन से पांच गुना अधिक है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह भी पता

चला है कि ऊंट के दूध में गोजातीय दूध की तुलना में विटामिन–बी 3 और फोलिक एसिड की उच्च सांद्रता होती है परन्तु विटामिन–ए की कम सांद्रता पायी जाती है।

ऊंट के दूध के औषधीय गुण

मधुमेहः ऊंट के दूध में इंसुलिन की सांद्रता (32μU/मिली), गोजातीय दूध (23 μU/मिली) की तुलना में अधिक है, इसलिए इस दूध की नियमित खपत रक्त शर्करा के स्तर को बनाए रखने के लिए बहुत प्रभावी है। नैदानिक अध्ययनों ने यह भी साबित किया कि मधुमेह के इलाज के लिए ऊंट के दूध का सफलतापूर्वक उपयोग किया जा सकता है।

गठियाः ऊंट के दूध में लैक्टोफेरिन भी उच्च सांद्रता में पाया जाता है, जो गठिया संबंधी बीमारियों से पीड़ित मरीजों सुधार के लिये उपयोगी साबित होती है।

बुढापा दूर रखेंः ऊंट के दूध में अल्फा–हाड्रोक्सिल अम्ल की उपस्थिति के कारण बुढापारोधी प्रभाव पड़ता है। अल्फा–हाड्रोक्सिल अम्ल, झुर्री और उम्र के धब्बे को खत्म करने और चेहरे पर सूखापन से छुटकारा पाने में मदद करता है।

केफिरः ऊंट के दूध को 85 डिग्री सेल्सियस पर फ्लैश पाश्चुराइजेशन का उपयोग करके वाणिज्यिक केफिर का निर्माण किया जाता है, जो रोगजनक जीवाणु से मुक्त होता है।

सुसाक (सुसा): यह पूर्वी अफ्रीका, केन्या और सोमालिया में पारंपरिक किण्वित ऊंट दूध का उत्पाद है।

गारिसः यह पारंपरिक रूप से सूडान और सोमालिया में उत्पादित और उपभोग करने योग्य ऊंट के दूध किण्वित उत्पाद है।

पारंपरिक भारतीय डेयरी उत्पाद

भारत में राजस्थान और गुजरात के रेगिस्तान के लोग, ऊंट के दूध से खोआ, राबड़ी, मलाई और मक्खन तैयार करने के लिए उपयोग करते हैं।

भारत में ऊंट के दूध का व्यावसायिक उत्पादन

पशुधन जनगणना रिपोर्ट (2012) के अनुसार, भारत में ऊंट की आबादी में 61% की कमी आई है और वर्तमान में ऊंट की जनसंख्या 4 लाख है। भारत में राजस्थान, गुजरात और हरियाणा में ऊंट की आबादी अधिक है तथा राजस्थान ने ऊंट को राज्य पशु के रूप में घोषित किया है। भारतीय नस्ल के ऊंट का चिकित्सकीय और स्वास्थ्य लाभों का अध्ययन आईसीएआर–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र,

अनुसंधान केंद्र के परिसर में ऊंट के दूध और इसके उत्पादों की बिक्री

दूध के उत्पाद

रेगिस्तानी क्षेत्रों में आबादी के बड़े हिस्से के आहार में ऊंट के दूध बने उत्पादों की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

ऊंटनी के दूध का पाउडर भी!

ऊंटनी का दूध अब जल्द ही देश में पाउडर के रूप में भी उपलब्ध होगा। इसके लिये कीमत ज्यादा चुकानी पड़ सकती है यानी करीब 6 से 12 हजार रुपये प्रति किलो। राजस्थान के सिरोही में कुछ ऊंट पालकों ने एक कोऑपरेटिव सोसायटी का गठन किया है। आईसीएआर–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र इस सोसायटी को प्रमोट कर रहा है। गुजरात की कुछ निजी कंपनियां फिलहाल ऊंटनी के दूध का पाउडर बनाकर बाजार में बेच रही हैं, लेकिन कोऑपरेटिव स्तर पर यह देश का पहला प्रयास है। इससे ऊंट दुग्ध उत्पादकों की मार्केटिंग संबधी समस्याएं भी कम होंगी। सोसायटी दूध एकत्र करेगी, फिर उसे गुजरात की निजी कंपनी के पास पाउडर बनाने के लिये भेजेगी। एक किलो पाउडर से करीब 10 से 12 किलो दूध तैयार किया जा सकेगा। एक किलो पाउडर की कीमत न्यूनतम छह हजार रुपए भी मानें तो पाउडर से दूध करीब 600 रुपए प्रति लीटर पड़ेगा। खुले में दूध 25 से 50 रुपए प्रति लीटर मिलता है। ऊंट पालकों को इस अवसर का लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

बीकानेर, राजस्थान में किया गया है और इन अध्ययनों के परिणाम विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में पहले ही प्रकाशित किए जा चुके हैं ।

राजस्थान में कुछ स्थानीय ऊंट पालक डेयरी ऊंट के दूध को संसाधित करते हैं। चाय मिठाई और आइसक्रीम के लिए अकसर ऊंट का दूध भी उपयोग किया जाता है। हाल ही में एफ.एस.एस.ए.आई. ने ऊंट के दूध के मानक को 2% वसा और 6% एस.एन.एफ. पूरे भारत के आधार पर (1 जून 2017 को एफ.एस.एस.ए.आई. प्रेस रिपोर्ट) निर्धारित किया है, जिससे उपभोक्ता में ऊंट के दूध के प्रति विश्वास बढ़ेगा तथा इसका उपयोग विशेष रूप से गाय के दूध की प्रोटीन एलर्जी से पीड़ित लोगों में और बढ़ेगा।

एशिया और अफ्रीका के रेगिस्तानी लोगों के लिए ऊंट का महत्व न केवल भोजन के स्रोत या परिवहन के साधन के रूप में दैनिक जीवन में उपयोगी है, बल्कि इसके दूध का उपयोग प्राचीन काल से औषधीय लाभ के रूप में भी किया जाता है। मानव और ऊंट के दूध के बीच संरचना–समानताओं से ऊंट के दूध की उपयोगता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, और फार्मा उद्योगों में भी इसकी औषधीय गुणों की चर्चा हो रही हैं। शायद ऊंट को छोड़कर कोई अन्य जानवर इंसानों को ऐसी बहुमुखी सहायता प्रदान नहीं करता है। ■

'दुग्ध सरिता' में विज्ञापन
आमदनी बढ़ाने का उत्तम साधन

2018

पशुपालक

सितम्बर

1. अच्छी मानसूनी वर्षा के कारण अकसर पशुओं के बाड़े में पानी भर जाता है, जिससे अधिक नमी के कारण पनपने वाली पशु बीमारियों के प्रकोप की संभावना बन जाती है । इसलिए पानी की निकासी की व्यवस्था अवश्य दुरूस्त रखें और पशु–बाड़ों को सूखा रखने का प्रयास करें ।

2. जहां तक संभव हो पशुओं को ऊंचे स्थान पर या प्लेटफॉर्म पर बांधें और उन्हें सूखा रखें ।

3. चारा भंडारों को भी सूखा और साफ रखें । पशुओं के चारागाहों को भी साफ रखना चाहिए अन्यथा रोगों के संक्रमण की संभावना बन जाती है ।

4. पशु बाड़ों के फर्श और दीवारों को साफ–सुथरा रखें तथा उन पर चूने के घोल से पुताई भी करें। बहुवर्षीय घासों की नियमित रूप से कटाई करते रहें और खेत में उचित मात्रा में उर्वरक, खाद, कम्पोस्ट आदि भी देते रहें ।

5. इस दौरान अकसर तापमान में उतार–चढ़ाव होता है, पशुओं को इससे बचाकर रखना चाहिए ।

6. दुधारू पशुओं को फीवर से बचाने के लिए जुलाई माह में दिये गये निर्देशों का पालन करें। पशुओं को परजीवियों से बचाने के उपाय भी करने चाहिए।

7. इस समय चारागाहों में हरे चारे की अत्यधिक उपलब्धता होती है, परंतु आवश्यकता से अधिक चराई करने से पशुओं को सेहत संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए पशुओं को एक निश्चित समय तक ही चारागाह में चरने के लिए छोड़े। पशुओं के आहार में आवश्यक लवण अवश्य मिलाएं।

8. अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध हरे चारे को भविष्य में उपयोग के लिए साइलेज बनाकर संरक्षित कर लें। हरे चारे को सूखी घास के साथ मिलाकर पशुओं को खिलाएं। इस महीने के अंतिम सप्ताह में बरसीम और अल्फाल्फा की बुआई कर दें।

2018

क कैलेंडर

अक्टूबर

1. इस महीने से सर्दियों के मौसम की शुरूआत होने लगती है। इसलिए पशुओं को सर्दी से बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

2. सर्दी के मौसम में अकसर चारे की कमी की समस्या उत्पन्न हो जाती है, इसलिए चारे का भंडारण अवश्य करें।

3. पशुओं के आहार में आवश्यक लवण अवश्य मिलाएं। इस महीने बरसीम की उन्नत किस्मों की बुआई अवश्य कर देनी चाहिए।

4. प्रचुर मात्रा में हरे चारे की उपलब्धता के बावजूद यह सुनिश्चित करें कि चारे में बड़ी मात्रा में सूखा चारा भी मिलाया जाए। यह करना आवश्यक है, अन्यथा हरे चारे की ज्यादा खपत से पशु में ग्रीन डायरिया का प्रकोप हो सकता है और एसिडोसिस की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है, जिससे खून में अम्लीयता बढ़ जाती है ।

5. इस महीने पशुओं की डीवर्मिंग अवश्य करनी चाहिए। डीवर्मरस और एंटीपैरासिटिकल दवाओं को एक निश्चित समय के बाद बदल देना चाहिए ताकि पशुओं में प्रतिरोधकता उत्पन्न ना हो।

6. एफएमडी से ग्रस्त पशुओं से प्रभावित क्षेत्र की 1 प्रतिशत पोटेशियम परमैंगनेट के घोल से सफाई करनी चाहिए।

7. यदि पशुओं का अभी तक एफएमडी, हीमोरोजिक सेप्टीसीमिया, ब्लैक क्वार्टर, एंटरोटॉक्सीमिया आदि रोगों के विरूद्ध टीकाकरण नही करवाया है तो इस महीने टीकाकरण अवश्य कराएं।

सौजन्य
पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :
दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या ☐
(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)
संस्थान / व्यक्ति का नाम.....
संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....
पता.....
शहर.....
राज्य.....पिन कोड.....ई–मेल.....
फोन.....मोबाइल.....
संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....
बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय
एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।
सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022
फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indairyasso.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **SYNB0009009**
बैंक : सिंडिकेट बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

Vadilal®©
PURE MILK
PURE ICE CREAM
Occasionzz
अमेरिकन नट्स
आइसक्रीम टब
GOURMET
Super Premium Ice Cream
पिस्टैशीओ आल्मंड फज
GOURMET PISTACHIO ALMOND FUDGE SUPER PREMIUM ICE CREAM
Occasionzz
AMERICAN NUTS
जम्बो
आइसक्रीम कप
कुकीज़ 'एन' क्रीम
BADAM CARNIVAL
1+1 आइसक्रीम पार्टी पैक
बादाम कार्निवल
Creative visualisation only   Conditions apply
www.vadilalicecreams.com
thecointegrated.com 2939

कहानी

दो बैलों की कथा

- प्रेमचंद

गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है। और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम 'गधा' का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते–जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफी में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी–कभी मारता भी है, कभी–कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है, अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी के पास दो बैल थे– हीरा और मोती। देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊंचे। बहुत दिनों साथ रहते–रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने–सामने या आस–पास बैठे हुए एक–दूसरे से मूक भाषा में विचार–विनिमय किया करते थे। एक–दूसरे के मन की बात को कैसे समझा जाता है, हम कह नहीं सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक–दूसरे को चाटकर सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी–कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे, विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोनों में घनिष्ठता होते ही धौल–धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफसी, कुछ हल्की–सी रहती है, फिर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला–हिलाकर चलते, उस समय हर एक की चेष्टा होती कि ज्यादा–से–ज्यादा बोझ मेरी ही गर्दन पर रहे।

दिन–भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते तो एक–दूसरे को चाट–चूट कर अपनी थकान मिटा लिया करते, नांद में खली–भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नांद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोई को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे कहाँ भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोई ले जाने में दांतों पसीना आ गया। पीछे से हांकता तो दोनों दाएँ–बाँए भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे की ओर जोर लगाते। मारता तो दोनों सींगे नीची करके हुंकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती तो झूरी से पूछते–तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो ?

हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था, और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने–चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ क्यों बेंच दिया ?

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन–भर के भूखे थे, लेकिन जब नांद में लगाए गए तो एक ने भी उसमें मुंह नहीं डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया। यह नया घर, नया गांव, नए आदमी उन्हें बेगाने–से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक भाषा में सलाह की, एक–दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गये। जब गांव में सोता पड़ गया तो दोनों ने जोर मारकर पगहा तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा, पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक–एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रातः काल सो कर उठा तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा–आधा गरांव लटक रहा था। घुटने तक पांव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आंखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुम्बन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए। और तालियाँ बजा–बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गांव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्त्वपूर्ण थी, बाल–सभा ने निश्चय किया, दोनों

पशु–वीरों का अभिनन्दन पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियां लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा– "ऐसे बैल किसी के पास न होंगे।"
दूसरे ने समर्थन किया– "इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए।'
तीसरा बोला– 'बैल नहीं हैं वे, उस जन्म के आदमी हैं।'

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस नहीं हुआ। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा तो जल उठी। बोली – 'कैसे नमक–हराम बैल हैं कि एक दिन वहां काम न किया, भाग खड़े हुए।'

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका–'नमक हराम क्यों हैं? चारा–दाना न दिया होगा तो क्या करते ?'
स्त्री ने रोब के साथ कहा–'बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और तो सभी पानी पिला–पिलाकर रखते हैं।'
झूरी ने चिढ़ाया–'चारा मिलता तो क्यों भागते ?'

स्त्री चिढ़ गयी–'भागे इसलिए कि वे लोग तुम जैसे बुद्धुओं की तरह बैल को सहलाते नहीं, खिलाते हैं तो रगड़कर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूं कहां से खली और चोकर मिलता है। सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूंगी, खाएं चाहें मरें।'

वही हुआ। मजूर की बड़ी ताकीद की गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाए।
बैलों ने नांद में मुंह डाला तो फीका–फीका, न कोई चिकनाहट, न कोई रस!
क्या खाएं ? आशा–भरी आंखों से द्वार की ओर ताकने लगे। झूरी ने मजूर से कहा–'थोड़ी–सी खली क्यों नहीं डाल देता बे ?'

'मालकिन मुझे मार ही डालेंगी।'
'चुराकर डाल आ।'
'ना दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की–सी कहोगे।'

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो–चार बार मोती ने गाड़ी को खाई में गिराना चाहा, पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज्यादा सहनशील था।

संध्या–समय घर पहुंचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बांधा और कल की शरारत का मजा चखाया फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बालों को खली चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी ने इन्हें फूल की छड़ी से भी छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहां मार पड़ी। आहत सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा !

नांद की तरफ आंखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पांव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते–मारते थक गया, पर दोनों ने पांव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाये तो मोती को गुस्सा काबू से बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट–टाटकर बराबर हो गया। गले में बड़ी–बड़ी रस्सियाँ न होतीं तो दोनों पकड़ाई में न आते।

हीरा ने मूक–भाषा में कहा–भागना व्यर्थ है।'
मोती ने उत्तर दिया–'तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।'
'अबकी बड़ी मार पड़ेगी।'
'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है तो मार से कहां तक बचेंगे ?'
'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है, दोनों के हाथों में लाठियां हैं।'
मोती बोला–'कहो तो दिखा दूं मजा मैं भी, लाठी लेकर आ रहा है।'
हीरा ने समझाया–'नहीं भाई ! खड़े हो जाओ।'
'मुझे मारेगा तो मैं एक–दो को गिरा दूंगा।'
'नहीं हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।'

मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुंचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती पलट पड़ता। उसके तेवर देख गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही भलमनसाहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया, दोनों चुपचाप खड़े रहे।

घर में लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी–सी लड़की दो रोटियां लिए निकली और दोनों के मुंह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शान्त होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहां भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी मां मर चुकी थी। सौतेली मां उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।

दोनों दिन–भर जाते, डंडे खाते, अड़ते, शाम को थान पर बांध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियां खिला जाती। प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो–दो गाल सूखा भूसा खाकर

भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आंखों में रोम–रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक–भाषा में कहा–'अब तो नहीं सहा जाता हीरा!
'क्या करना चाहते हो ?'
'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूंगा।'

'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियां खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है, यह बेचारी अनाथ हो जाएगी।'

'तो मालकिन को फेंक दूं, वही तो इस लड़की को मारती है।
'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।'
'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते, बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।'
'हां, यह मैं स्वीकार करता, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे।'
इसका एक उपाय है, पहले रस्सी को थोड़ा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।'

रात को जब बालिका रोटियां खिला कर चली गई तो दोनों रस्सियां चबने लगे, पर मोटी रस्सी मुंह में न आती थी। बेचारे बार–बार जोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वह लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूंछें खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली–'खोल देती हूँ, चुपके से भाग जाओ, नहीं तो ये लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाएं।'

उसने गरांव खोल दिया, पर दोनों चुप खड़े रहे।
मोती ने अपनी भाषा में पूंछा–'अब चलते क्यों नहीं ?
हीरा ने कहा–'चलें तो, लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आएगी, सब इसी पर संदेह करेंगे।

साहसा बालिका चिल्लाई–'दोनों फूफा वाले बैल भागे जे रहे हैं, ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया, और भी तेज हुए, गया ने शोर मचाया। फिर गांव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहां तक कि मार्ग का ज्ञान रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहां पता न था। नए–नए गांव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा–'मुझे मालूम होता है, राह भूल गए।'
'तुम भी बेतहाशा भागे, वहीं उसे मार गिराना था।'
'उसे मार गिराते तो दुनिया क्या कहती ? वह अपने धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोडें ?'

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरने लगे। रह–रहकर आहट लेते रहे थे। कोई आता तो नहीं है।

जब पेट भर गया, दोनों ने आजादी का अनुभव किया तो मस्त होकर उछलने–कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिलाए और एक–दूसरे को ठेकने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहां तक कि वह खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आ गया। संभलकर उठा और मोती से भिड़ गया। मोती ने देखा कि खेल में झगड़ा हुआ चाहता है तो किनारे हट गया।

अरे ! यह क्या ? कोई सांड़ डौंकता चला आ रहा है। हां, सांड़ ही है। वह सामने आ पहुंचा। दोनों मित्र बगलें झांक रहे थे। सांड़ पूरा हाथी था। उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है, लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नजर नहीं आती। इन्हीं की तरफ आ भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है !

मोती ने मूक–भाषा में कहा–'बुरे फंसे, जान बचेगी ? कोई उपाय सोचो।'
हीरा ने चिंतित स्वर में कहा–'अपने घमंड में फूला हुआ है, आरजू–विनती न सुनेगा।'
'भाग क्यों न चलें?'
'भागना कायरता है।'
'तो फिर यहीं मरो। बंदा तो नौ दो ग्यारह होता है।'
'और जो दौड़ाए?'
'तो फिर कोई उपाए सोचो जल्द!'

'उपाय यह है कि उस पर दोनों जने एक साथ चोट करें। मैं आगे से रगेदता हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी तो भाग खड़ा होगा। मेरी ओर झपटे, तुम बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम है, पर दूसरा उपाय नहीं है।

दोनों मित्र जान हथेली पर लेकर लपके। सांड़ को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजुरबा न था।

वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्यों–ही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। सांड़ उसकी तरफ मुड़ा तो हीरा ने रगेदा। सांड़ चाहता था, कि एक–एक करके दोनों को गिरा ले, पर

ये दोनों भी उस्ताद थे। उसे वह अवसर न देते थे। एक बार सांड़ झल्लाकर हीरा का अन्त कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर उसके पेट में सींग भोंक दिया। सांड़ क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींगे चुभा दिया।

आखिर बेचारा जख्मी होकर भागा और दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहां तक कि सांड़ बेदम होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने उसे छोड़ दिया। दोनों मित्र जीत के नशे में झूमते चले जाते थे।

मोती ने सांकेतिक भाषा में कहा–'मेरा जी चाहता था कि बचा को मार ही डालूं।'
हीरा ने तिरस्कार किया–'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।'
'यह सब ढोंग है, बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।'
'अब घर कैसे पहुंचोगे वह सोचो।'
'पहले कुछ खा लें, तो सोचें।'

सामने मटर का खेत था ही, मोती उसमें घुस गया। हीरा मना करता रहा, पर उसने एक न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाये थे कि आदमी लाठियां लिए दौड़ पड़े और दोनों मित्र को घेर लिया, हीरा तो मेड़ पर था निकल गया। मोती सींचे हुए खेत में था। उसके खुर कीचड़ में धंसने लगे। न भाग सका। पकड़ लिया। हीरा ने देखा, संगी संकट में है तो लौट पड़ा। फंसेंगे तो दोनों फंसेंगे। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

प्रातःकाल दोनों मित्र कांजी हौस में बंद कर दिए गए।

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा था कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहां कई भैंसे थीं, कई बकरियां, कई घोड़े, कई गधे, पर किसी के सामने चारा न था, सब जमीन पर मुर्दों की तरह पड़े थे।

कई तो इतने कमजोर हो गये थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए रहते, पर कोई चारा न लेकर आता दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती।

रात को भी जब कुछ भोजन न मिला तो हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। मोती से बोला–'अब नहीं रहा जाता मोती !

मोती ने सिर लटकाए हुए जवाब दिया–'मुझे तो मालूम होता है कि प्राण निकल रहे हैं।'
'आओ दीवार तोड़ डालें।'
'मुझसे तो अब कुछ नहीं होगा।'
'बस इसी बूत पर अकड़ते थे !'
'सारी अकड़ निकल गई।'

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मजबूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिए और जोर मारा तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा उसने दौड़–दौड़कर दीवार पर चोटें कीं और हर चोट में थोड़ी–थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।

उसी समय कांजी हौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाजिरी लेने आ निकला। हीरा का उद्दंडपन्न देखकर उसे कई डंडे रसीद किए और मोटी–सी रस्सी से बांध दिया।

मोती ने पड़े–पड़े कहा–'आखिर मार खाई, क्या मिला?'
'अपने बूते–भर जोर तो मार दिया।'
'ऐसा जोर मारना किस काम का कि और बंधन में पड़ गए।'
'जोर तो मारता ही जाऊंगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएं।'
'जान से हाथ धोना पड़ेगा।'

'कुछ परवाह नहीं। यों भी तो मरना ही है। सोचो, दीवार खुद जाती तो कितनी जाने बच जातीं। इतने भाई यहां बंद हैं। किसी की देह में जान नहीं है। दो–चार दिन यही हाल रहा तो मर जाएंगे।'

'हां, यह बात तो है। अच्छा, तो ला फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।'

मोती ने भी दीवार में सींग मारा, थोड़ी–सी मिट्टी गिरी और फिर हिम्मत बढ़ी, फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह जोर करने लगा, मानो किसी प्रतिद्वंदी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घंटे की जोर–आजमाई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गई, उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे–से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे, तीनों घोड़ियां सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियां निकलीं, इसके बाद भैंस भी खसक गई, पर गधे अभी तक ज्यों के त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा–'तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते?'
एक गधे ने कहा–'जो कहीं फिर पकड़ लिए जाएं।'
'तो क्या हरज है, अभी तो भागने का अवसर है।'
'हमें तो डर लगता है। हम यहीं पड़े रहेंगे।'

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें, या न भागें, और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया तो हीरा ने कहा–'तुम जाओ,

मुझे यहीं पड़ा रहने दो, शायद कहीं भेंट हो जाए।'

मोती ने आंखों में आंसू लाकर कहा–'तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए हो तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊं ?'

हीरा ने कहा–'बहुत मार पड़ेगी, लोग समझ जाएंगे, यह तुम्हारी शरारत है।'

मोती ने गर्व से बोला–'जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधना पड़ा, उसके लिए अगर मुझे मार पड़े, तो क्या चिंता। इतना तो हो ही गया कि नौ–दस प्राणियों की जान बच गई, वे सब तो आशीर्वाद देंगे।'

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार–मार कर बाड़े से बाहर निकाला और तब अपने बंधु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसके लिखने की जरूरत नहीं। बस, इतना ही काफी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बांध दिया गया।

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहां बंधे पड़े रहे। किसी ने चारे का एक तृण भी न डाला। हां, एक बार पानी दिखा दिया जाता था। यही उनका आधार था। दोनों इतने दुर्बल हो गए थे कि उठा तक नहीं जाता था, उठरियां निकल आईं थीं। एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते–होते वहां पचास–साठ आदमी जमा हो गए। तब दोनों मित्र निकाले गए और लोग आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते।

ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीददार होता ? सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आंखें लाल थीं और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया और दोनों मित्र के कूल्हों में उंगली गोदकर मुंशीजी से बातें करने लगा। चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों का दिल कांप उठे। वह क्यों है और क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई संदेह न हुआ। दोनों ने एक–दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया।

हीरा ने कहा–'गया के घर से नाहक भागे, अब तो जान न बचेगी।' मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया–'कहते हैं, भगवान सबके ऊपर दया करते हैं, उन्हें हमारे ऊपर दया क्यों नहीं आती ?'

'भगवान के लिए हमारा जीना मरना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उसके पास तो रहेंगे। एक बार उस भगवान ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था। क्या अब न बचाएंगे ?'

'यह आदमी छुरी चलाएगा, देख लेना।'

'तो क्या चिंता है ? मांस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी के काम आ जाएगा।'

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी–बोटी कांप रही थी। बेचारे पांव तक न उठा सकते थे, पर भय के मारे गिरते–पडते भागे जाते थे, क्योंकि वह जरा भी चाल धीमी हो जाने पर डंडा जमा देता था।

राह में गाय–बैलों का एक रेवड़ हरे–भरे हार में चरता नजर आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनंद से बैठा पागुर करता था कितना सुखी जीवन था इनका, पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिंता नहीं कि उनके दो बाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुःखी हैं।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि परिचित राह है। हां, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गांव मिलने लगे, प्रतिक्षण उनकी चाल तेज होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह ! यह लो ! अपना ही हार आ गया। इसी कुएं पर हम पुर चलाने आया करते थे, यही कुआं है।

मोती ने कहा–'हमारा घर नजदीक आ गया है।'
हीरा बोला –'भगवान की दया है।'
'मैं तो अब घर भागता हूँ।'
'यह जाने देगा ?'
इसे मैं मार गिराता हूँ।
'नहीं–नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहां से आगे हम न जाएंगे।'

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भांति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। दढ़ियल भी पीछे–पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी–बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आंखों से आनन्द के आंसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियां पकड़ लीं। झूरी ने कहा–'मेरे बैल हैं।'

'तुम्हारे बैल कैसे हैं ? मैं मवेसीखाने से नीलाम लिए आता हूँ।'

''मैं तो समझता हूँ, चुराए लिए जाते हो! चुपके से चले जाओ, मेरे बैल हैं। मैं बेचूंगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार हैं ?'

'जाकर थाने में रपट कर दूँगा।'

'मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को जबरदस्ती पकड़ ले जाने के लिए बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढ़ियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया। दढ़ियल भागा। मोती पीछे दौड़ा, गांव के बाहर निकल जाने पर वह रुका, पर खड़ा दढ़ियल का रास्ता वह देख रहा था, दढ़ियल दूर खड़ा धमकियां दे रहा था, गालियां निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था, और मोती विजयी शूर की भांति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गांव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे। जब दढ़ियल हारकर चला गया तो मोती अकड़ता हुआ लौटा। हीरा ने कहा–'मैं तो डर गया था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।'

'अब न आएगा।'

'आएगा तो दूर से ही खबर लूंगा। देखूं, कैसे ले जाता है।'

'जो गोली मरवा दे ?'

'मर जाऊंगा, पर उसके काम न आऊंगा।'

'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।'

'इसलिए कि हम इतने सीधे हैं।'

जरा देर में नाँदों में खली भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था। वह उनसे लिपट गया।

झूरी की पत्नी भी भीतर से दौड़ी–दौड़ी आई। उसने ने आकर दोनों बैलों के माथे चूम लिए। ■

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार ने खरीफ 2018–19 के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य को उत्पादन की लागत का डेढ़ गुना या उससे ज्यादा बढ़ाया

खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP)

जिंस		2018-19 (रूपये प्रति क्विंटल)		
खरीफ फसलें	किस्म	उत्पादन लागत	न्यूनतम समर्थन मूल्य	उत्पादन लागत* पर प्रतिशत लाभ
धान	सामान्य	1166	1750	50.09
	ग्रेड ए		1770	
ज्वार	हाईब्रिड	1619	2430	50.09
	मालदांडी		2450	
बाजरा		990	1950	96.97
रागी		1931	2897	50.01
मक्का		1131	1700	50.31
अरहर (तूर)		3432	5675	65.36
मूंग		4650	6975	50.00
उड़द		3438	5600	62.89
मूंगफली छिलका सहित		3260	4890	50.00
सूरजमुखी बीज		3592	5388	50.01
सोयाबीन		2266	3399	50.01
तिल		4166	6249	50.01
रामतिल		3918	5877	50.01
कपास	मध्यम रेशा	3433	5150	50.01
	लम्बा रेशा		5450	

*इसमें सभी भुगतान की गई लागत जैसे मानव श्रम, बैल श्रम, पट्टाभूमि के लिए दिया गया किराया, बीज, उर्वरक, खाद, सिंचाई जैसे साधनों के उपयोग का खर्च, उपकरणों और फार्म भवनों का मूल्यह्रास, कार्यशील पूंजी पर ब्याज, पम्प सेटों आदि के प्रचालन के लिए डीजल/बिजली, विविध व्यय और पारिवारिक श्रम का आरोपित मूल्य शामिल है।

सफलता गाथा

नयी राह पर चलीं
बनीं कामयाब डेरी उद्यमी

जगदीप सक्सेना

श्रीमती प्राची अभय पाटिल, जी हां, यही नाम है जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र) की युवा डेरी उद्यमी का, जो आज अपने क्षेत्र में कामयाबी की मिसाल बन गयीं हैं। नयी सोच, नयी तकनीकों और हमेशा कुछ नया करने–सीखने की ललक ने उन्हें एक आदर्श और प्रेरक व्यक्तित्व बना दिया है। वर्ष 1986 में जन्मी प्राची ने बी.कॉम. की डिग्री हासिल करने के साथ अपने पढ़ने, गाना गाने, भोजन पकाने और पर्यटन के शौकों को भी जीवित रखा, जिससे उनमें हमेशा एक नयी ऊर्जा और उत्साह बना रहा। और यही वजह है कि प्राची ने लीक से हटकर डेरी शुरू करने की सोची और इसकी शुरूआत हरियाणा से नौ मुर्रा भैंसें खरीदकर की। यह बात है सन् 2000 की। प्राची इस डेरी व्यवसाय को ऊंचाइयों तक पहुंचाना चाहतीं थीं, इसलिए उन्होंने बछियों–कटड़ियों को वैज्ञानिक तौर–तरीकों और प्रबंधन के नये उपायों से पालकर लगातार इनकी संख्या बढ़ाने का प्रयास किया। इस काम में उन्हें अपने पति का सहयोग भी मिला। नतीजा यह कि आज उनके डेरी फार्म में लगभग 290 गायें और 30 भैंसें हैं। और यह फार्म 'मोटके–पाटिल कैटल एंड डेरी फार्म' के नाम से इस क्षेत्र में प्रसिद्ध है। पिछले लगभग पांच वर्षों से श्रीमती पाटिल मंगलमूर्ति डेरी कोऑपरेटिव सोसायटी, जाम्भली, तालुका शिरोल, जिला कोल्हापुर के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी भी निभा रही है।

श्रीमती पाटिल ने अपने डेरी फार्म के बारे में बताते हुए कहा, 'हमारा उद्देश्य बेहतर क्वालिटी वाले दूध का उत्पादन करना है और इसके लिए हम अधिक क्षमता वाले दुधारू पशुओं को वैज्ञानिक तौर–तरीकों से पालते हैं और अधिक आनुवंशिक क्षमता वाले पशुओं से उनका कृत्रिम गर्भाधान कराते हैं। हम अपने खेतों में हरा चारा उगाते हैं और पशुओं को संतुलित राशन उपलब्ध कराते हैं, जिससे दूध उत्पादन की लागत कम रहती है और हमारे फार्म का लाभ बढ़ता है।' डेरी फार्म में उन्नत विधियां अपनाने के कारण गायों के समूह

डेरी महिलाओं को प्रशिक्षण

से औसतन प्रति दिन 1630 लीटर दूध प्राप्त होता है, जबकि भैंसों के समूह के लिए यह मात्रा 165 लीटर प्रतिदिन है।

अपनायीं नई तकनीकें

श्रीमती पाटिल के पास लगभग 22 एकड़ खेतिहर भूमि है, जिसके एक बड़े हिस्से यानी 16 एकड़ पर वह हरे चारे की खेती करवाती हैं, ताकि पशुओं को हरे चारे की उपलब्धता वर्ष भर बनी रहे। इसके लिए मुख्य रूप से मक्का, ज्वार और संकर नेपियर–6 घास को उगाया जाता है। दूसरी ओर सूखे चारे के लिए मुख्य रूप से धान, गेहूं या तूर का भूसा खिलाया जाता है। बाई–पास प्रोटीन कन्सन्ट्रेट और चीलेटेड खनिज मिश्रण को भी पशुओं के नियमित आहार

नयी मशीनों से दूध दुहाई

में शामिल किया जाता है। चारे के लिए साइलेज बैग और साइलो पिट की व्यवस्था भी है और पशुओं के पीने के लिए साफ पानी चौबीसों घंटे उपलब्ध रहता है। दरअसल इस डेरी फार्म की संरचना और अवधारणा पूरी तरह से जांची–परखी वैज्ञानिक सोच पर आधारित है। उदाहरण के तौर पर लगभग डेढ़ एकड़ क्षेत्र पर बने पशु बाड़े (कैटल शेड) में पशुओं को उनकी आयु के हिसाब से अलग–अलग किये गये क्षेत्रों में रखा जाता है और गाभिन पशुओं की अलग व्यवस्था है, ताकि उनके आहार और देखभाल की उचित व्यवस्था की जा सके। बाड़े को पूरी तरह से हवादार बनाया गया है और गर्मियों में तापमान को नियंत्रित रखने के लिए फुहारा प्रणाली भी लगायी है। सभी पशुओं के बैठने और आराम करने के लिए 'रबर मैट' बिछायी गयीं हैं ताकि पशुओं की मैस्टीटाइटिस और खुर व जोड़ों के रोगों से रक्षा हो सके। सभी पशुओं को विधिवत् टैग करके उनकी देखरेख, खान और स्वास्थ्य का रिकॉर्ड रखा जाता है।

दूध उत्पादन में पशुओं का स्वास्थ्य सबसे अहम् भूमिका निभाता है, इसलिए नियमित रूप से 'डीवर्मिंग' की जाती है और समयानुसार टीके भी लगाये जाते हैं। स्वच्छ और स्वस्थ दूध उत्पादन के लिए आवश्यक सभी उपाय अपनाये जाते हैं

डेरी फार्म के गोबर से बायोगैस उत्पादन

और दूध दुहने के लिए मशीनों का उपयोग किया जाता है। पूरे डेरी फार्म को सीसीटीवी की निगरानी में रखा गया है ताकि पशुओं की गतिविधियों पर चौबीसों घंटे नजर रखी जा सके और किसी भी असहज दशा में उनकी समस्या का तुरंत निराकरण किया जा सके। पशुओं के मल–मूत्र (एक्स्क्रीटा) का उपयोग केंचुआ खाद और जैविक खाद बनाने के लिए किया जाता है। साथ ही 150 यूनिट प्रतिदिन की बिजली उत्पादन क्षमता वाला बायोगैस प्लांट भी लगाया है।

इस तरह श्रीमती पाटिल का डेरी फार्म इस क्षेत्र का एक आदर्श फार्म है, जिसे देखने के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में डेरी किसान आते हैं और श्रीमती पाटिल से बहुत कुछ सीख कर जाते हैं। इच्छुक डेरी किसानों को डेरी फार्म में निःशुल्क प्रशिक्षण भी दिया जाता है। श्रीमती पाटिल के प्रयासों से इस क्षेत्र में आधुनिक डेरी फार्म की लहर–सी चल पड़ी है, जिसका लाभ डेरी किसानों के साथ दूध उपभोक्ताओं को भी मिल रहा है। अपने क्षेत्र और देश में डेरी विकास में असाधारण योगदान के लिए श्रीमती पाटिल को अनेक मंचों से पुरस्कृत व सम्मानित किया गया है। उन्हें दो बार जिला परिषद, कोल्हापुर की ओर से 'आदर्श गोठा' पुरस्कार दिया गया, जबकि दो बार 'आदर्श गोठा' पुरस्कार कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ, मर्यादित, कोल्हापुर की ओर से दिया गया। श्रीमती पाटिल 'कृषि भूषण' और 'गोकुल श्री' पुरस्कारों से भी सम्मानित हो चुकी हैं। हाल में उन्हें

डेरी फार्म का नियमित निरीक्षण

इंडियन डेरी एसोसिएशन के प्रतिष्ठित 'सर्वश्रेष्ठ डेरी महिला पुरस्कार' (पश्चिम क्षेत्र) से भी सम्मानित किया गया। श्रीमती पाटिल ने डेरी विकास के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान और साख बनायी है, जो निश्चित रूप से डेरी किसानों, विशेषकर महिलाओं, के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। ■

आई टी

डेरी व्यवसाय में सहायक

आई वी आर आई - डेयरी मैनेजर ऐप

रूपसी तिवारी[1], प्रज्ञा जोशी[2], अमनदीप सिंह[2] तथा त्रिवेणी दत्त[3]

1. प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, एटिक
2. शोध छात्र, प्रसार शिक्षा विभाग
3. संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक)

भाकृअनुप–भारतीय पशु–चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश (243122)

डेरी व्यवसाय को स्वरोजगार की तरह अपना कर तथा इस क्षेत्र में सही जानकारी एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रामीण युवा इस से उत्कृष्ट लाभ प्राप्त कर सकते हैं। भारत में डेयरी व्यवसाय की बढ़ती लोकप्रियता को ध्यान में रख कर भारतीय पशु–चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर ने राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल तथा भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के साथ मिलकर पशुचिकित्सकों, डेयरी उद्यमियों, विभिन्न संगठनों और पशु–चिकित्सा से सम्बंधित विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कौशल को विकसित करने के लिए डेयरी मैनेजर ऐप को विकसित किया है। इस ऐप के माध्यम से लाभार्थी गाय एवं भैंस की विभिन्न नस्लों, डेयरी के रख–रखाव के विभिन्न पहलुओं जैसे आहार प्रबंधन, बछड़ों का रख–रखाव, आवास प्रबंधन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, पशुओं की पहचान करने के तरीके एवं पशुओं में पाये जाने वाले हानिकारक व्यवहारों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। डेयरी मैनेजर ऐप एंड्रॉइड मोबाइल फोन के लिए विकसित किया गया है तथा यह एक ऑफलाइन ऐप है और इसका कुल परिमाण 4.9 एमबी है।

आईवीआरआई–डेयरी मैनेजर ऐप में संबंधित जानकारी को सुविधा के लिए विभिन्न खंडों में बांटकर प्रस्तुत किया गया है।

उपयुक्त नस्लें

इस खंड में व्यावसायिक दृष्टिकोण के अनुकूल गाय एवं भैंस की नस्लों की जानकारी दी गयी है। इसके अलावा विभिन्न विदेशी नस्लों एवं संकर प्रजातियों की गायों के बारे में भी बताया गया है। गाय की देशी नस्लें जैसे साहीवाल, गिर, रेड सिंधी, थारपरकर, देवनी, विदेशी नस्लें जैसे जर्सी, होल्स्टीन फ्रीजियन, ब्राउन स्विस, रेड डेन, संकर प्रजातियां जैसे करन स्विस, सुनंदिनी, करन फ्राइज, वृंदावनी एवं भैंस की नस्लें जैसे मुर्रा, नीली रावी, सुरती, मेहसाना, भदावरी के बारे में जानकारी दी गयी है।

आवास प्रबंधन

आवास प्रबंधन के अंतर्गत डेयरी निर्माण के अनुरूप सही जगह का चयन, आवास प्रणाली के विभिन्न प्रकारों का वर्णन जैसे पारंपरिक आवास प्रणाली (एकल पंक्ति प्रणाली एवं दोहरी पंक्ति प्रणाली) और बंधनमुक्त आवास प्रणाली, आवास निर्माण के समय ध्यान देने योग्य बिंदु (पशुगृह में जगह की आवश्यकता, फर्श एवं छत बनाने के लिए आवश्यक सामग्री, फर्श एवं छत सामग्री के प्रकार, छत की ऊंचाई, डेयरी फार्म की साफ/सफाई) एवं डेयरी फार्म की सफाई के लिए उपयोग में आने वाले आम कीटाणुनाशक (ब्लीचिंग पाउडर, कॉस्टिक सोडा, साबुन, सोडियम हाइपोक्लोराइट, वॉशिंग सोडा) के बारे में जानकारी प्रदान की गयी है।

आहार प्रबंधन

आहार प्रबंधन खंड में पशु आहार के प्रकार (दाना, हरा एवं सूखा चारा), पशुओं में वजन के अनुसार दाना, सूखे एवं हरे चारे की आवश्यकता, दुधारू एवं ग्याभिन गाय एवं भैंसो में दाने की आवश्यकता एवं डेयरी में पशु के आहार प्रबंधन के समय ध्यान दिए जाने योग्य प्रमुख बिंदुओं की जानकारी दी गयी है। इसके अलावा चारा संरक्षण की विभिन्न तकनीकों जैसे घास को सुखा कर रखना (हे), साइलेज तथा हे बनाना एवं इन तकनीकों के लिए उपयुक्त फसलों के बारे में बताया गया है।

नवजात बछड़ा प्रबंधन

इस खंड में जन्म के उपरांत बछड़े की देखभाल के लिए उपयुक्त जानकारी प्रदान की गयी है। इस खंड के अंतर्गत जन्म के तुरंत बाद की जाने वाली कार्यवाही, बछड़े का आहार प्रबंधन, बछड़े को 3 महीने तक, 3 महीने से 6 महीने तक एवं 6 महीने से 12 महीने तक दी जाने वाली आहार सामग्री, आवास प्रबंधन, जन्म के उपरांत होने वाले रोग जैसे दस्त, निमोनिया, परजीवी संक्रमण आदि का प्रतिरक्षण, चिकित्सीय सहायता, सींग का विघटन एवं बधियाकरण करने का उचित समय आदि महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जानकारी प्रदान की गयी है।

स्वच्छ दूध उत्पादन

दूध को मनुष्य के सेवन योग्य बनाने के लिए दुग्ध उत्पादन के दौरान स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। इस खंड में स्वच्छ दूध की महत्ता तथा स्वच्छ दुग्ध उत्पादन में सहायक विशेष प्रबंधन विधियों की जानकारी दी गयी है ।

डेयरी का सामान्य प्रबंधन

डेयरी द्वारा उत्तम उत्पादन प्राप्त करने के लिए इसका वैज्ञानिक प्रबंधन आवश्यक है। इस खंड में पशु के उत्कृष्ट स्वास्थ से जुड़ी जानकारी, गर्भावस्था के दौरान एवं उसके बाद के समय में देखभाल और प्रबंधन, सुधारात्मक उपाय, गर्मियों एवं सर्दियों में पशुओं की देखभाल, कृमिनाशन एवं टीकाकरण सारिणी, पशुओं की कुछ महत्वपूर्ण बीमारियों जैसे चयापचय रोग (अफारा रोग/आमाशय में गैस भरना, कैल्शियम अल्पता (मिल्क फीवर/दुग्ध ज्वर), कीटोसिस (कीटोनमियता), फॉस्फोरस अल्पता/पोस्ट पार्चुरियेन्ट हिमोग्लोबिन्यूरिया, यूरिया विषाक्तता तथा विषाणुजनित और जीवाणुजनित रोग (खुरपका–मुंहपका, गलाघोंटू, ब्रुसेलोसिस, तपेदिक, लंगड़ी बुखार, थनैला) आदि की जानकारी प्रदान की गयी है।

पशुओं की पहचान करने के तरीके

डेयरी पशुओं में अंकन के साधनों का उपयोग पशुओं की पहचान और चिन्हित करने के लिए किया जाता है। इस खंड में अंकन करने के लिए प्रयोग में लाये जाने वाली स्थायी और अस्थायी तकनीकों एवं सामान्यतः प्रयोग में लायी जाने वाली तकनीकों जैसे चिप्पी लगाना, गोदना, आदि का वर्णन किया गया है।

पशुओं में पाए जाने वाले हानिकारक/असामान्य व्यवहार

डेयरी पशुओं में विभिन्न प्रकार के असामान्य व्यवहार एवं दोष पाए जाते हैं। इस खंड में पशुओं द्वारा दिखाये जाने वाले असामान्य व्यवहार जैसे की चीजों को काटना, जीभ को घुमाना, आँखों को घुमाना, खाना बाहर फेंकना, लात मारना, चाटना, खुद को रगड़ना आदि के बारे में एवं उनके कारणों के बारे में बताया गया है।

डेयरी मैनेजर ऐप अभी अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है, परन्तु जल्द ही हिंदी भाषा में भी उपलब्ध होगा। इन सब के अतिरिक्त डेयरी मैनेजर ऐप में दुग्ध उत्पादन एवं नवजात बछड़ा प्रबंधन पर दो ज्ञान वर्धक फिल्मों के लिंक भी दिए गए हैं, जिन्हें लिंक पर क्लिक कर यूट्यूब पर देखा जा सकता है। ये फिल्में हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में उपलब्ध हैं।

डेयरी मैनेजर ऐप डेयरी एवं दूध उत्पादन से संबंधित उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक जानकारी एवं सहायता प्रदान करता है जिसका एक डेयरी को सुचारू रूप से चलाने एवं लाभ अर्जित करने के लिए अवश्य उपयोग करना चाहिए। यह एक आसान ऐप है, जिसका डेयरी मैनेजर और डेयरी किसान कुशल उपयोग कर सकते हैं। ■

गायों को सूखा यानी ड्राई क्यों करें?

दुग्धावस्था के बाद गायों को शुष्ककाल अर्थात 'ड्राई–पीरियड' जिसे सूखा भी कहते हैं, से गुजरना पड़ता है। यह वह अवधि है जब गर्भावस्था के कारण दूध की पैदावार कम होने लगती है तथा गाय प्रसवकाल से लगभग एक माह पहले ही दूध देना बंद कर देती है। कुछ पशु तो प्रसव के 2–3 माह पहले से ही बहुत कम दूध देने लगते हैं। यह एक अच्छा लक्षण भी है क्योंकि दूध न देने से दुग्ध–कोशिकाओं को विश्राम मिलता है। जिन कोशिकाओं को मरम्मत की आवश्यकता होती है, उन्हें इसके लिए कुछ समय मिल जाता है. पिछले दुग्धकाल में नष्ट हुई दुग्ध–कोशिकाओं के स्थान पर नई कोशिकाएँ आने लगती हैं ताकि अगले ब्यांत में दूध का उत्पादन अधिक हो सके। यदि गायों को शुष्क या 'ड्राई' न करें तो दुग्ध–कोशिकाएँ नष्ट होती रहती हैं तथा इन्हें स्वस्थ होने का अवसर ही नहीं मिलता, परिणामस्वरुप बहुत कम संख्या में ही दुग्ध–कोशिकाएँ दूध बनाने में सक्षम होती हैं। अनुसंधान द्वारा ज्ञात हुआ है कि जो गऊएँ ब्यांत से दो महीने पहले दूध देना बंद कर देती हैं, वह अगले ब्यांत में लगभग 125 लीटर अधिक दूध देती हैं।

गुणों से भरपूर,

भारतीय गोवंश का दूध अनेक गुणों वाला है। इसमें पोषण

बुद्धिवर्धक

खोजों के अनुसार भारतीय गायों के दूध में 'सैरिब्रोसाईट' नामक तत्व पाया गया है, जो मस्तिष्क के 'सेरिब्रम' को स्वस्थ–सबल बनाता है। यह स्नायु कोषों को बल देने वाला, बुद्धि वर्धक है।

आंखों की ज्योति, कद और बल बढ़ाने वाला

गाय के दूध में बीटा–केरोटीन नामक एक ऐसा उपयोगी एवं बलशाली पदार्थ मिलता है जो भैंस के दूध से कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। बच्चों की लंबाई और सभी के बल बढ़ाने के लिए यह अत्यंत उपयोगी होता है। आंखों की ज्योति को बढ़ाने के लिए यह अत्यंत उपयोगी है। यह कैंसर रोधक भी है ।

रामबाण है गाय का दूध ओमेगा 3 से भरपूर

वैज्ञानिक अनुसंधान के बाद यह सिद्ध हो चुका है कि फैटी एसिड ओमेगा 3 (यह एक ऐसा पौष्टिकतावर्धक तत्व है, जो सभी रोगों की समाप्ति के लिए रामबाण है) केवल गोमाता के दूध में सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है। आहार में ओमेगा 3 से डी.एच. तत्व बढ़ता है। इसी तत्व से मानव–मस्तिष्क और आंखों की ज्योति बढ़ती है। डी.एच. में दो तत्व ओमेगा 3 और ओमेगा 6 बताये जाते हैं। मस्तिष्क का संतुलन इसी तत्व से बनता है। आज विदेशी वैज्ञानिक इसके कैप्सूल बनाकर दवा के रूप में इसे बेचकर अरबों–खरबों रूपये का व्यापार कर रहे हैं।

गाय के दूध से फुर्ती

जन्म लेने पर गाय का बछड़ा दो घंटे में ही चलने लगता है जबकि भैंस का पाड़ा दो दिन बाद चलता है। स्पष्ट है कि गाय एवं उसके दूध में भैंस की अपेक्षा अधिक फुर्ती होती है।

असाध्य बीमारियों की समाप्ति

गाय के दूध में स्टोनटियन नामक ऐसा पदार्थ भी होता है जो विकिरण (रेडियेशन) प्रतिरोधक होता है। यह असाध्य बीमारियों को शरीर पर आक्रमण करने से रोकने का कार्य भी करता है। रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है जिससे रोग का प्रभाव क्षीण हो जाता है ।

विटामिन से भरपूर मां के दूध के समकक्ष

प्रो. एन.एन. गोडबोले के अनुसार गाय के दूध में, अल्बुमिनाइट, वसा, क्षार, लवण तथा कार्बोहाइड्रेट तो हैं ही साथ ही समस्त विटामिन भी उपलब्ध हैं। यह भी पाया गया है कि देशी गाय के दूध में 4 प्रतिशत प्रोटीन, 0.7 प्रतिशत खनिज व विटामिन ए,बी,सी,डी व ई प्रचुर मात्रा में विद्यमान है, जो गर्भवती महिलाओं व बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं।

कॉलेस्ट्राल से मुक्ति

वैज्ञानिकों के अनुसार गाय के दूध से कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता। हृदय रोगियों के लिए यह बहुत उपयोगी माना गया है।

गाय का दूध

और अनेक औषधीय गुण भरे पड़े हैं। यह अमृत के समान है।

टी.बी. और कैंसर की समाप्ति

क्षय (टी.बी.) रोगी को यदि गाय के दूध में शतावरी मिलाकर दी जाए तो टी.बी. रोग समाप्त हो जाता है। इसमें एच.डी. जी.आई. प्रोटीन होने से रक्त की शिराओं में कैंसर प्रवेश नहीं कर सकता।

विटामिन बी 12

विटामिन बी 12 भारतीय गाय की बड़ी आंतों में पाया जाता है, जो व्यक्ति को निरोगी एवं दीघायु बनाता है। इससे बच्चों एवं बड़ों को शारीरिक विकास में बढ़ोतरी तो होती ही है साथ ही खून की कमी जैसी बीमारियां भी ठीक हो जाती हैं।

कोलेस्ट्रम (खीस) में है जीवनी शक्ति

प्रसव के बाद गाय के दूध में ऐसे तत्व होते हैं जो अत्यंत मूल्यवान, स्वास्थ्यवर्धक हैं। इसलिए इसे सुखाकर व इसके कैप्सूल बनाकर, असाध्य रोगों की चिकित्सा के लिए इसे बेचा जा रहा है। यही कारण है कि जन्म के बाद बछड़े, बछिया को यह दूध अवश्य पिलाना चाहिए। इससे उसकी जीवनी शक्ति आजीवन बनी रहती है। इसके अलावा गौ उत्पादों में कैंसर रोधी तत्व एनडीजीआई भी पाया गया है जिस पर यूएस पेटेन्ट प्राप्त है।

हृदय रोगियों के लिए गाय का दूध ही सर्वोत्तम

इंटरनेशनल कार्डियोलॉजी के अध्यक्ष डा. शान्तिलाल शाह ने कहा है कि भैंस के दूध में लांगचेन फैट होता है जो नसों में जम जाता है। फलस्वरूप हार्टअटैक की संभावना अधिक हो जाती है। इसलिए हृदय रोगियों के लिए गाय का दूध ही सर्वोत्तम है। भैंस के दूध के ग्लोब्यूल्स भी आकार में अधिक बड़े होते हैं तथा स्नायु कोषों के लिए हानिकारक हैं।

गाय के दूध में दस गुण

चरक संहिता में गाय के दूध में दस गुणों का वर्णन है –

स्वादु, शीत, मृदु, स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलम।

गुरू मंदं प्रसन्नं च गल्यं दशगुणं पय।।

अर्थात – गाय का दूध स्वादिष्ट, शीतल, कोमल, चिकना, गाढ़ा, श्लक्ष्ण, लसदार, भारी और बाहरी प्रभाव को विलम्ब से ग्रहण करने वाला तथा मन को प्रसन्न करने वाला होता है।

केवल भारतीय देसी नस्ल की गाय का दूध ही पौष्टिक

करनाल के नेशनल ब्यूरो आफ एनिमल जैनेटिक रिसोर्सेज संस्था ने अध्ययन कर पाया है कि भारतीय गायों में प्रचुर मात्रा में बी2 एलील जीन पाया जाता है, जो उन्हें स्वास्थ्यवर्धक दूध उत्पन्न करने में मदद करता है। भारतीय नस्लों में इस जीन की फ्रिक्वेंसी 100 प्रतिशत तक पायी जाती है।

परिचय

हमारी अपनी साहीवाल गाय

डा. जीत सिंह यादव[1], सुशील कुमार[2], डॉ. के. पी. सिंह[3], डा. पुष्पेन्द्र कुमार[3]
1. यंग प्रोफेशनल – II 2. शोध छात्र, एनडीआरआई, करनाल 3. प्रधान वैज्ञनिक
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर 243122

साहीवाल गाय अन्य नस्लों की तुलना में भारी, संयमित शरीर और लटकती हुई खाल वाली नस्ल है। इसके पशु प्रायः लम्बे और मोटे तथा भारी-भरकम शरीर वाले होते है। इनका रंग गहरे लाल या हल्का लाल पाया जाता है। यदा कदा चमकीले सफेद धब्बे भी आवरण पर दिखाई देते हैं। साहीवाल और लाल सिन्धी में अंतर करने वाला अंग थूथन होता है। साहीवाल का हल्के रंग का थूथन होता है। साहीवाल की आंखों के चारो ओर गेरूए रंग की धारी पायी जाती है। थूथन और आंखों की बरौनी हल्के रंग की होती है। भारत में इस नस्ल के बहुत से समूह उपलब्ध हैं। इसका दूध उत्पादन प्रति दूध स्त्रावण काल 1400 से 2500 कि.ग्रा. के बीच होता है। साहीवाल इस प्रायद्वीप की सबसे लोकप्रिय नस्लों में से एक है। इसका निर्यात श्रीलंका, केन्या, लेटिन अमेरिका के कई देशों और वेस्टइंडीज देशों में हुआ है। जहां पर जमेका होप नाम की एक नई नस्ल साहीवाल और जर्सी संकर पशुओं के संकरण से विकसित हुई है। साहीवाल गाय फिरोजपुर, अमृतसर, गुरदासपुर में भी पाई जाती है। साहीवाल गाय लगभग 29 देशों में फैली है। इसके नर का वीर्य हमारे देश से विभिन्न देशों में जाता है, जैसे- मॉरीशस, केन्या, तनजानिया, मलेशिया, फिलीपींस, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यांमार, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, ब्राजील, जमैका, आस्ट्रेलिया, और न्यूजीलैंड आदि।

भारत में साहीवाल गाय के फार्म

1. राष्ट्रपति सम्पदा, नई दिल्ली
2. राजकीय पशुधन प्रक्षेत्र, हिसार, हरियाणा
3. राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा
4. केन्द्रीय प्रजनन प्रक्षेत्र, बैली चरणा जम्मू छावनी, जम्मू कश्मीर
5. अमृतसर फिरपोल गौशाला, घी मंडी, अमृतसर, पंजाब
6. गोपशु प्रजनन प्रक्षेत्र, चक गंजरिया, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
7. गोपशु प्रजनन प्रक्षेत्र, नाभा, पंजाब
8. गोपशु प्रजनन प्रक्षेत्र, अंजोरा जनपद दुर्ग, छत्तीसगढ़
9. गोपशु प्रजनन प्रक्षेत्र, बोद, अमरावती, महाराष्ट्र
10. सैन्य डेरी फार्म, मेरठ, उत्तर प्रदेश
11. गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय, डेरी फार्म, पंतनगर, उत्तराखंड
12. सतगुरू सेवा संघ, जीवन नगर, सिरसा, हरियाणा
13. सतगुरू सेवा संघ, बानीखुर्द, जनपद लुधियाना, पंजाब
14. तमिलनाडु सहकारी दुग्ध उपभोक्ता संघ, ऊटी, तमिलनाडु
15. सैन्य फार्म, मेरठ, उत्तर प्रदेश
16. गो पशु प्रजनन फार्म, जगद्वार, पंचमिले, सिलचर, असम
17. साबरमती गोशाला आश्रम, बिंदाज, गुजरात

साहीवाल नस्ल की गाय की विशेषताएं

- ऊंचाईः नर–136 सेंमी., मादा–120 सेंमी.
- वजनः नर–400–500 किग्रा., मादा–300–350 किग्रा.
- साहीवाल एक भारी नस्ल है। इसका शरीर सिमेट्रिकल और ढीली चमड़ी होती है। पशु लम्बे, गहरे, चमकीले और अपेक्षाकृत सुस्त होते हैं। सींग–छोटे व स्टम्पी होते हैं।
- कूबड़ः नर पशुओं में बड़ा और एक तरफ झुका होता है।
- नेवल फेलेपः ढीला व लटका हुआ होता है।
- म्यानः नर पशुओं में पेडुलस घड़ी की तरह लटकी हुई होती है।
- पूंछः लंबी व सुन्दर और जमीन तक टिकी हुई और अन्त में काली होती है।
- साहीवाल की पहचान केवल थूथन ही है। रेड सिंधी में थूथन का रंग गहरा होता है और साहीवाल में हल्के रंग का होता है।

- साहीवाल गाय की आंखों के चारों ओर सफेद छल्ला सा बना होता है।
- अयनः लंबा, मजबूत और कभी–कभी सफेद धब्बे होते हैं।
- दूधः 2000 से 4000 किग्रा./ब्यांत घी–4 प्रतिशत से 4.5 प्रतिशत
- अधिकतम दूधः 22.7 किग्रा. प्रतिदिन, भारत
- यह दूध वाली अच्छी नस्ल है और इसमें चीचड़, कीली के प्रतिरोधी क्षमता होती है। ग्लोबल वार्मिंग का इस पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। ■

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion Rs.	Inaugural Offer Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

* Fifth colour: extra charges will be levied.

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm
Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *SYNB0009009;* ***Bank:*** *Syndicate Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads
Mr. Narendra Kumar Pandey
Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association
IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237 Fax: 91-11-26174719
E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम
बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन
स्वस्थ ब्यांत
बढ़िया पाचन प्रणाली
स्वस्थ अयन
एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
AYURVET
आयुर्वेट लिमिटेड
कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587
रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092
पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

RNI No.: DELHIN/2017/74023

प्रकाशक व मुद्रक ज्ञान प्रकाश वर्मा द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट,
ए–89 / 1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन,
आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना